राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष-47 ■ अंक-10 ■ मार्च 2026 ■ ₹10 ■ पृष्ठ-36

नव संकल्प

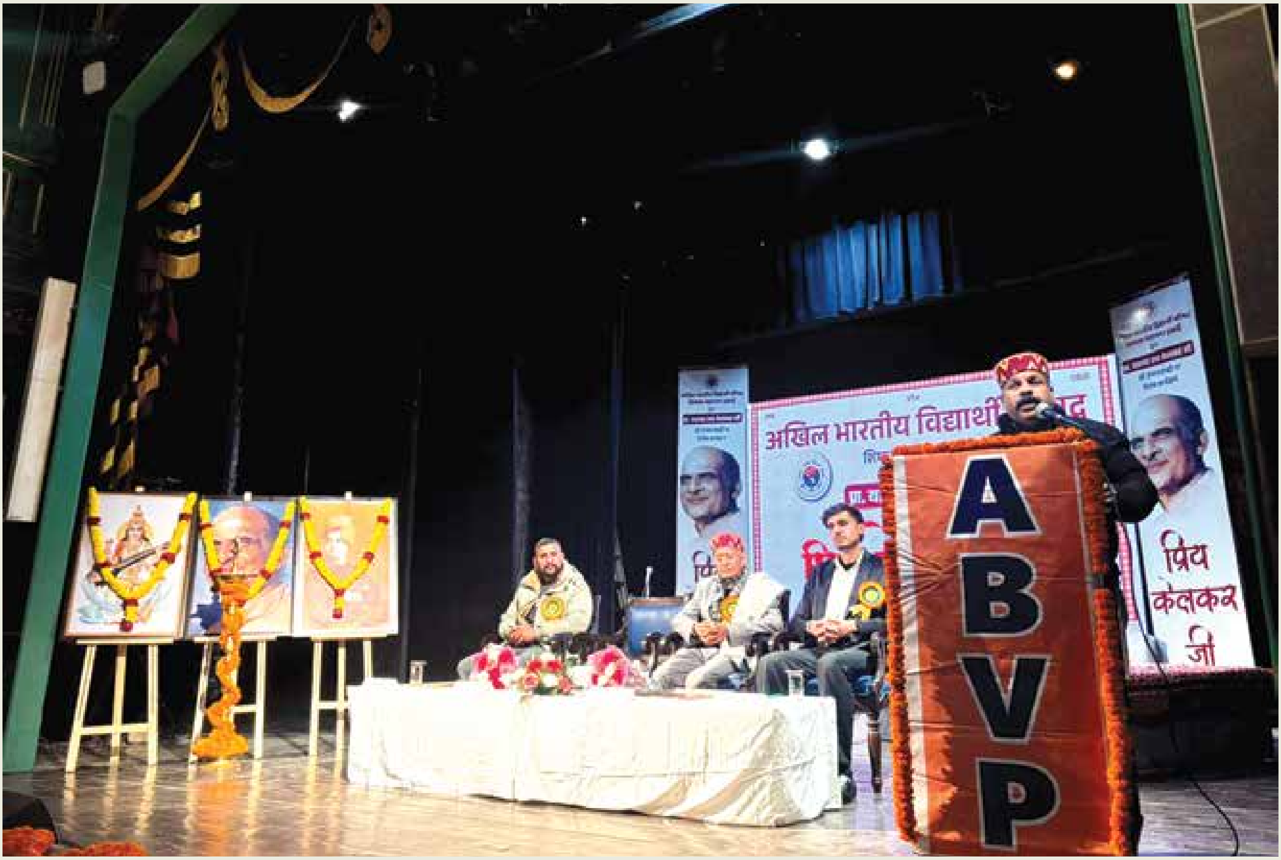

शिमला में आयोजित प्रा. यशवंतराव केलकर जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित अभिवाचन कार्यक्रम को संबोधित करते अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री देवदत्त जोशी एवं मंचासीन अतिथिगण

दिल्ली विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय कला मंच द्वारा आयोजित 'मदारी' कला महोत्सव में कला का प्रदर्शन करते प्रतिभागी

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष–47, अंक–10
मार्च 2026

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक मण्डल
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नई दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित। **संपादक** *पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार।

अबकी बार

05 **नए संकल्प की आवश्यकता**

अमेरिका के न्यूरो साइंटिस्ट डा. जेरेड कुंजी हॉरवॉथ द्वारा किए गए एक शोध की चर्चा इन दिनों...

संपादकीय	04
डिजिटल लत का बढ़ता संकट और युवाओं का भविष्य	08
'स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम' में सहायक अभाविप के आयाम	10
पर्यावरण संरक्षण के लिए एकजुट हुए युवा	13
दिल्ली विश्वविद्यालय में 'मदारी' का आयोजन	14
नव परिवर्तन और वर्ष प्रतिपदा	15
राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा से ओतप्रोत परिषद 'गीत धारा'	18
गुलामी की निशानियों से मुक्त होने में जुटी भारतीय सेना	21
India's Advancements in the Field of Artificial Intelligence : A New Dawn	22
संघ दर्शन में सामूहिकता	25
बांग्लादेश में बदलाव और भारत की चुनौतियां	26
वीरबाला काली बाई प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न	27
The Apostle of Self-Realisation and Social Awakening	28
शैक्षिक संस्थानों में व्याप्त अनियमितताओं को लेकर उच्च शिक्षा मंत्री का घेराव	30
प्रा. केलकर के जन्म शताब्दी वर्ष पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन	31
ABVP Condemns Detention of Activists After Protest at Azim Premji University	32
ABVP Breaks Left Fortress and Scripts History	33
वामपंथियों का असली चेहरा फिर आया सामने, वामपंथ-विरोधी विद्यार्थियों की हत्या का किया गया प्रयासः अभाविप	34

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

भारत कठिन परिस्थिति से गुजर रहा है। चुनौतियां आंतरिक भी हैं और वाह्य भी। सक्षम नेतृत्व के कारण इन चुनौतियों की तपन सामान्य नागरिकों तक नहीं पहुंच रही, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वह समाप्त हो गई हैं। जरा सी चूक, दिल्ली बम विस्फोट जैसी घटना की पुनरावृत्ति के लिए काफी है।

कश्मीर से लेकर बस्तर तक और दक्षिण-पूर्व में स्थित निकोबार द्वीप समूह तक जारी विकास राष्ट्रविरोधी तत्वों के लिए आंख की किरकिरी बना हुआ है। दूसरी ओर पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद अपनी हारी हुई लड़ाई को पूरी शक्ति से जीत में बदलने की कोशिश में है। सुरक्षा बलों की सजगता के चलते वह अपनी योजनाओं में सफल तो नहीं हो पा रहे हैं, लेकिन यही असफलता उन्हें खीझ कर और अधिक दुस्साहस के लिए प्रेरित कर रही है।

देश की सभी सीमाओं पर व्याप्त अराजक स्थिति इसे और अधिक जटिल बना देती है। कथित युवा क्रांति के बाद बांग्लादेश में बनी सरकार अल्पसंख्यकों पर होने वाले अत्याचारों को रोकने में अभी तक तो विफल ही सिद्ध हुई है। पड़ोसी राष्ट्र नेपाल भी इसी अराजक क्रांति का शिकार हुआ। यह हास्यास्पद ही है कि इन अराजकतावादियों ने लोकतंत्र का नाम लेकर लोकतांत्रिक तरीके से चुनी सरकारों को ही पलट दिया। चीन के साथ संबंधों में स्थिरता बनाए रखने के लिए भी निरंतर ऊर्जा खर्च करनी पड़ रही है। उत्तर-पश्चिमी सीमा पर न केवल भारत-पाकिस्तान के बीच तनावपूर्ण संबंध, संसाधनों की बड़ी मात्रा को सोख लेते हैं, अपितु अब पाकिस्तान-अफगानिस्तान के बीच बढ़ता हिंसक संघर्ष चिन्ता का कारण बन रहा है। अमेरिका और ईरान के बीच बनी युद्ध की स्थिति पूरे एशिया को प्रभावित करेगी।

भारत के अंदर सक्रिय विरोधी शक्तियां, भारत की सांस्कृतिक एकात्मता को विखंडित करने के लिए भारत की विराट पहचान के विरुद्ध छोटे-छोटे वर्गों, समूहों तथा क्षेत्रीय अस्मिताओं को प्रबल करने के प्रयत्न कर रही हैं।

इस जटिलता को बढ़ाने के लिए भारत के अंदर सक्रिय विरोधी शक्तियां, भारत की सांस्कृतिक एकात्मता को विखंडित करने के लिए भारत की विराट पहचान के विरुद्ध छोटे-छोटे वर्गों, समूहों तथा क्षेत्रीय अस्मिताओं को प्रबल करने के प्रयत्न कर रही हैं। जब कोई छोटा समूह राष्ट्रीय पहचान से अपने-आप को काट कर देखता है तो वह एकात्मता और सामूहिकता के समक्ष वास्तविक चुनौती प्रस्तुत करता है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि राजनीतिक प्रतिपक्ष, जो लोकतंत्र का अनिवार्य घटक होता है, राष्ट्रीय एकात्मता अथवा विश्व में भारत की प्रतिष्ठा पर होने वाली चोट को अधिकांशतः एक अवसर की तरह लेता है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया द्वारा चुने जाने में असफल रहने का बदला लेने के लिए, वह प्रायः निर्वाचित सरकार को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नीचा दिखाने के लिए प्रयत्नशील हो जाता है। हाल ही में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में कमीज उतार कर मुख्य विपक्षी दल के कार्यकर्ताओं ने भारत का मान, वैश्विक स्तर पर गिराने का निकृष्ट प्रयास किया। उनके नेता द्वारा इन प्रदर्शनकारियों के कृत्य की निन्दा करने के स्थान पर बब्बर शेर कह कर उनका मनोबल बढ़ाने की कोशिश का साथ तो उनके गठबंधन सहयोगी भी नहीं दे सके।

भारत के देशभक्त युवा को भारत के विरुद्ध खड़ा करने के लिए एक झूठा विमर्श गढ़ा जा रहा है। भारत की सांस्कृतिक विरासत को हीन भाव के साथ प्रस्तुत करने, पश्चिमी विद्रूपताओं को आधुनिकता के रूप में स्थापित करने, शाश्वत मूल्यों को पिछड़ापन बताने, समूहों के बीच द्वैत उत्पन्न करने यथा शहर को गांव के विरुद्ध, अमीर को गरीब के विरुद्ध लड़ाने, सफलता और विकास के नाम पर मूल्यों की बलि चढ़ाना एवं फिर उसी विकास का मार्ग अवरुद्ध करने के लिए पर्यावरण और जैव विविधता जैसे मुद्दों की आड़ में संघर्ष को पनपाने जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति होती दिखाई देती है। ऐसे में युवाओं को इस नकारात्मक विमर्श के जाल से बाहर लाने और राष्ट्रीय चिन्तन से जोड़ने संबंधी गंभीर प्रयास तीव्र करने ही होंगे।

भारतीय नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

आपका
संपादक

नए संकल्प की आवश्यकता

■ अश्वनी शर्मा

अमेरिका के न्यूरो साइंटिस्ट डा. जेरेड कुंजी हॉरवॉथ द्वारा किए गए एक शोध की चर्चा इन दिनों काफी हो रही है। अपने शोध में डा. हॉरवॉथ ने बताया है कि वर्तमान समय में 15 से 27 वर्ष के युवा (जिन्हें जेन-जी का नाम दिया गया है) अपने से पूर्व की पीढ़ी, जिनमें उनके अपने माता-पिता भी शामिल हैं (जिन्हें मिलेनियल्स कहा गया है) से कम बुद्धिमान है। यह अप्रत्याशित है क्योंकि शोध में बताया गया है कि 1800 के दशक के आरंभ से ऐसा पहली बार हुआ है कि किसी पीढ़ी की बुद्धि लब्धि (आईक्यू), स्मरणशक्ति, एकाग्रता, समस्या सुलझाने की शक्ति पूर्व पीढ़ी से कम हुई है। डा. जेरेड ने यह शोध 80 देशों के युवाओं से संबंधित आंकड़ों के अध्ययन के आधार पर किया। शोध में उन्होंने यह भी पाया कि पिछले दशकों में जैसे-जैसे तकनीकी का उपयोग विद्यालयों में बढ़ा, उससे बच्चों की सीखने की प्रवृत्ति और स्मरणशक्ति घटती चली गई।

अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ साइकोलॉजिकली के अनुसार गेमिंग और मोबाइल की आदत युवाओं में भावनात्मक कमजोरी बढ़ाती है, जबकि यूनिसेफ की रिपोर्ट बढ़ते स्क्रीन टाइम को युवाओं में झिझक, दोस्तों से दूरी और संवादहीनता के लिए जिम्मेदार ठहराती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के 'सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन' के स्वास्थ्य आंकड़े बताते हैं कि चार घंटे से अधिक स्क्रीन टाइम वाले युवाओं में डिप्रेशन 26 प्रतिशत मिला, जबकि दो घंटे से कम स्क्रीन टाइम वाले युवाओं में डिप्रेशन का प्रतिशत केवल 9.5 पाया गया। वैश्विक स्तर पर लगातार हो रहे ऐसे अनेकों शोध अधिक स्क्रीन टाइम के दुष्प्रभावों की ओर गंभीर संकेत दे रहे हैं।

हाल ही में गाजियाबाद में आत्महत्या करने वाली तीन बहनों द्वारा लिखी गई डायरी के पृष्ठ डरावने हैं, जो इस खतरे की भयावहता का अनुभव कराती है। आभासी जगत को वास्तविक जीवन समझ कर वर्तमान पीढ़ी किस सामाजिक आपातकाल का सामना कर रही है, यह संवेदनशीलता के साथ जानने और समझने की आवश्यकता

है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़े सोशल मीडिया प्लेटफार्म एवं डिजिटल साधनों के उपयोग से प्रेरित अपराधों की अप्रत्याशित वृद्धि के संकेत दे रहे हैं। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार 2019 से 2024 के मध्य सिर्फ फेसबुक से जुड़े साइबर अपराध के आंकड़ों में सौ प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। स्वास्थ्य की दृष्टि से किए गए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के शोध भी नकारात्मक संकेत दे रहे हैं। यही कारण है कि इस नए खतरे से निपटने के लिए विश्व के सभी देश गंभीरता से समाधान तलाशने के लिए जुटने लगे हैं।

पोलैंड की एक सॉफ्टवेयर विकास कंपनी के लिए काम करने वाले शोधकर्ता मैक्स वूल्फ की एक रिपोर्ट के अनुसार औसतन एक व्यक्ति प्रतिदिन 58 बार अपना स्मार्टफोन देखता है। विश्वभर में लोग औसतन प्रतिदिन छह घंटे 37 मिनट समय स्क्रीन पर बिताते हैं। अपनी रिपोर्ट में उन्होंने बताया है कि एक औसत अमेरिकी का दैनिक स्क्रीन टाइम छह घंटे और 59 मिनट है। आयु वर्ग के आधार पर पता चलता है कि आठ से दस वर्ष आयु के बच्चों का स्क्रीन टाइम प्रतिदिन छह घंटे है, जबकि 15 से 18 आयु वर्ग के बच्चों का प्रतिदिन स्क्रीन टाइम 7.5 घंटे है। यह आंकड़े चौंकाने वाले हैं। विश्व में दक्षिण अफ्रीका एक ऐसा देश है, जो अन्य किसी भी देश की तुलना में प्रतिदिन औसतन 9 घंटे और 38 मिनट से अधिक का समय स्क्रीन पर बिताता है। इसके विपरीत जापान में रहने वाले लोग प्रतिदिन सबसे कम समय स्क्रीन पर बिताते हैं, औसतन 3 घंटे और 45 मिनट।

एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार भारतीयों ने गत वर्ष मोबाइल स्क्रीन पर लगभग छह घंटे का समय बिताया। इनमें से अधिकतर लोगों का सत्तर प्रतिशत समय सोशल मीडिया, मोबाइल गेम और वीडियो देखने में व्यतीत हुआ। कुल मिलाकर भारतीयों ने गत वर्ष 1.1 लाख करोड़ घंटे का समय अपने मोबाइल स्क्रीन को दिया। हाल ही में तेजपुर विश्वविद्यालय के साथ मिलकर आईसीएमआर द्वारा तैयार की गई एक रिपोर्ट बताती है कि वर्तमान समय में प्रत्येक माता-पिता को एक स्पष्ट स्क्रीन टाइम नीति निर्धारित करने की आवश्यकता है। ऐसा ही सुझाव इंडियन पीडियाट्रिक एकेडमी ने भी दिया है, जिसमें दो वर्ष तक के बच्चों के लिए स्क्रीन को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित करने के साथ ही दस वर्ष से अधिक आयु वाले विद्यार्थियों के लिए भी नियंत्रण बढ़ाने के लिए कहा गया है।

यह विडंबना ही है कि एक ओर वैश्विक कृत्रिम बुद्धिमत्ता सम्मेलन का आयोजन करके नई तकनीकी के लिए विश्व का ध्यान, भारत की ओर आकर्षित किया जा रहा है, दूसरी ओर जिस पीढ़ी पर नई तकनीक के विस्तारण की जिम्मेदारी है, वही इसके दुष्प्रभाव से जूझ रही है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने इस विषय को गंभीरता से लेते हुए देश के नचिकेताओं को बचाने और सजग करने के लिए गत जनवरी माह में स्वामी विवेकानंद जयंती के दिन देशभर में 'स्क्रीन टाइम से एक्टिविटी टाइम' अभियान का शुभारम्भ किया है। अभियान के माध्यम से विद्यार्थियों को अत्यधिक स्क्रीन उपयोग के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करते हुए रचनात्मक एवं शारीरिक गतिविधियों से जोड़ने के लिए चरणबद्ध योजना बनाई गई है।

युवाओं के लिए ऐसे अभियान का विचार करने वाला अभाविप संभवतः पहला छात्र संगठन बन गया है, जिसने समाज में स्क्रीन जीवन और सामाजिक जीवन के बीच सामंजस्य की बात कही है। अभियान के माध्यम से अभाविप डिजिटल अनुशासन, स्क्रीन मुक्त दिवस, स्क्रीन उपवास, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, पुस्तकों का अध्ययन, धरोहर से जुडी यात्राएं, सेवा से सीख जैसे कार्यक्रमों के साथ परिसरों में युवाओं, शिक्षकों और अभिभावकों से विचार-विमर्श संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। विश्व के अनेक देशों की रिपोर्ट और विशेषज्ञ भी कुछ ऐसा ही करने की सलाह देते हुए दिखाई देते है।

सेंटर ऑफ डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन ने अपने शोध 'स्क्रीन टाइम वर्सेज लीन टाइम' में स्क्रीन टाइम को कम करते हुए प्रतिदिन केवल 60 मिनट समय देने के साथ ही अन्य गतिविधियों में समय व्यतीत करने का परामर्श दिया है। गिलफोर्ड जर्नल्स द्वारा कालेज विद्यार्थियों के स्क्रीन टाइम पर किए गए शोध में बताया गया है कि सोशल मीडिया के उपयोग को प्रतिदिन केवल तीस मिनट तक सीमित करने से अकेलापन और अवसाद में उल्लेखनीय कमी आती है। सोशल मीडिया का जो छात्र सीमित उपयोग करते हैं, वह मानसिक स्तर पर तुलनात्मक रूप से बेहतर महसूस करते हैं। कम उपयोग से 'कुछ छूट जाने का डर' भी कम होता है और मानसिक स्वास्थ्य में भी सुधार होता है।

स्क्रीन टाइम से जुड़े संकट से निपटने के लिए विश्व के अनेक देशों की सरकार अपने-अपने ढंग से कदम उठा रही है। स्वीडन ने अपने यहां विद्यालयों में डिजिटल उपकरण को हटाकर पुनः कागज-कलम-किताब की ओर लौटने का निर्णय लिया है। इसी तरह स्कैंडिनेविया के स्वास्थ्य विभाग ने भी विभिन्न आयु वर्ग के विद्यार्थियों से जुडी नीति के माध्यम से डिजिटल उपकरणों के सीमित उपयोग और समय निर्धारण करके स्क्रीन टाइम को कम करने की दिशा में पहल की है। फ्रांस में भी जन स्वास्थ्य विभाग ने ग्यारह वर्ष की आयु तक के बच्चों को हर प्रकार के डिजिटल उपकरण से दूर रखने के निर्देश जारी किए हैं।

'द आयरिश टाइम्स' के पत्रकार एलेक्स कुनी ने अभिभावकों को सचेत करते हुए अपने एक लेख में लिखा है कि सिलिकॉन वैली की बड़ी-बड़ी कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अपने बच्चों को डिजिटल उपकरण या फोन से दूर रखें हुए है, ताकि वह उसके दुष्प्रभावों से बच सके। यह केवल कुछ उदाहरण हैं। वास्तविकता में वर्तमान समय में लोग तकनीक का उपयोग करके जीवन को सुविधायुक्त और आसान बनाने की ओर बढ़ तो रहे हैं, लेकिन साथ ही वह इन उपकरणों के संयमित उपयोग या डिजिटल कल्याण (वेल-बीइंग) के उपायों से जुड़ी खोज पर भी ध्यान केन्द्रित किए हुए हैं। स्वीडन की उच्च माध्यमिक विद्यालय, उच्च शिक्षा और अनुसंधान मंत्री लोटा एडहोल्म कहती हैं कि समाधान की राह डिजिटल बनाम पारंपरिक की लड़ाई में नहीं, बल्कि इसके सामंजस्य में है। भविष्य स्मार्ट कक्षाओं एवं कागज-कलम के मध्य हाइब्रिड तालमेल में छिपा है।

ऑस्ट्रेलिया और स्वीडन की तरह स्क्रीन टाइम कम करने की दिशा में बिहार सरकार भी ठोस नीति बनाने की दिशा में कदम बढ़ा चुकी है। इस संबंध में बेंगलुरु स्थित राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान (निमहान्स) से विस्तृत रिपोर्ट बनाने के लिए कहा गया है। रिपोर्ट में बच्चों के बढ़ते स्क्रीन टाइम, सोशल मीडिया का प्रयोग, ऑनलाइन गेमिंग के प्रभाव का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाएगा। देश में गोवा सहित अन्य राज्यों में भी इस विषय पर चर्चा जारी है। निमहान्स ने समस्या से निपटने के लिए तकनीक के स्वस्थ उपयोग की सेवा (एसएचयूटी क्लिनिक) और सेंटर फॉर वेल-बीइंग जैसे प्रकल्प आरंभ किए हैं, जहां अभिभावकों के लिए निशुल्क कार्यशालाओं के माध्यम से परिवार एवं बच्चों के स्क्रीन उपयोग को संतुलित करने के विषय में विस्तार से जानकारी प्रदान की जा रही है।

स्क्रीन से जुड़ी समस्याओं से निपटने का कार्य मात्र चिंतन से नहीं किया जा सकता है। डिजिटल तंत्र से जुड़े तमाम घटकों को पता है कि तकनीकी के वरदान को अभिशाप बनने से रोकने के लिए अनेक नए नवाचारों हेतु प्रयास करना होगा। इस संबंध में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में पठन संस्कृति को बढ़ावा एवं पुस्तक संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए किए 'बांचो गुजरात' जैसे महाअभियानों को राष्ट्रीय स्तर पर अपनाने की आवश्यकता है। अभाविप ने कोरोना काल में 'एक किताब पढ़ने की चुनौती' अभियान के माध्यम से युवाओं को लॉकडाउन में मानसिक अवसाद से निकलने और पुस्तक पढ़ने का एक मार्ग प्रदान किया था। अब एक बार पुनः कुछ ऐसे चुनौतीपूर्ण अभियानों को छेड़ने की आवश्यकता है। इसके साथ ही तेज गति से दस हजार कदम चलने की चुनौती, योगा चुनौती, ध्यानवस्था चुनौती, स्क्रीन-टाइम कम करने की चुनौती, फोन मुक्त अध्ययन चुनौती, पुस्तक अध्ययन चुनौती, डिजिटल मुक्त रविवार चुनौती, पर्वतारोहण चुनौती के साथ ही स्क्रीन टाइम को एक्टिविटी टाइम में बदलने के लिए प्रकृति के निकट समय बिताना, खानपान पाक कला, सृजन समय, कहानी समय, बाहर खेलने का समय, पत्र लेखन समय जैसे नए-नए सृजनात्मक विचारों को दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा। ऐसे अभियानों के माध्यम से आभासी जगत (वर्चुअल वर्ल्ड) और वास्तविक जगत (रियल वर्ल्ड) के संतुलन से जुड़े मॉडल को आसानी से सार्वजनिक चर्चा का विषय बनाया जा सकता है।

विश्वगुरु भारत के लिए युवा आशा की वह किरणें हैं, जिनकी लालिमा बनी रहे और इसके लिए सभी को विचार करना पड़ेगा। इस अभियान के लिए राह दिखाते हुए स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि युवाओं के चरित्र निर्माण से ही राष्ट्र का निर्माण संभव है। इसलिए अब ऐसे भारत की आवश्यकता है, जिसकी युवा पीढ़ी बलवान, सामर्थ्यवान, आधुनिकता और आध्यात्म के मध्य समन्वय स्थापित करके, उसके अनुरूप जीवन जीते हुए भारत को विश्व का सिरमौर बना सके। ■

(लेखक, अभाविप उत्तर-पश्चिम क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री हैं।)

डिजिटल लत का बढ़ता संकट और युवाओं का भविष्य

■ राहुल गौड़

1968 में सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रयोग हुआ। बिब्ब लैटेन और जॉन डारली ने कोलंबिया विश्वविद्यालय के छात्रों को एक चर्चा के लिए प्रयोगशाला में बुलाया। छात्रों को लगा कि वह नगरीय जीवन की समस्याओं पर विचार-विमर्श करने आए हैं, किंतु वास्तविक प्रयोग प्रतीक्षालय में घटित होना था। जब छात्र प्रश्नावली भर रहे थे, तभी कमरे के एक छिद्र (वेंट) से धीरे-धीरे धुआं भरने लगा। प्रश्न यह था-क्या छात्र स्थिति की गंभीरता को समझते हुए उठकर किसी को सूचना देंगे या सब एक-दूसरे की ओर देखेंगे और चुपचाप बैठे रहेंगे? नियंत्रण स्थिति में जब छात्र अकेले थे, तब 75 प्रतिशत ने पहल की। किंतु जब समूह में थे, तो अधिकतर ने प्रतीक्षा की कि शायद कोई और कुछ करेगा। यह धुआं वास्तविक आग का नहीं, बल्कि टाइटेनियम डाइऑक्साइड से बना कृत्रिम धुआं था। किंतु इस प्रयोग ने मानव-स्वभाव की एक गहरी प्रवृत्ति, संकट में भी सामूहिक निष्क्रियता को सामने रखा। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यही 'धुआं' हमारे समाज, विशेषकर बच्चों और युवाओं के जीवन में डिजिटल तकनीक के रूप में फैलता दिखाई देता है। सभी देख रहे हैं कि कुछ गड़बड़ है, किंतु पहल कौन करे-यह प्रश्न अनुत्तरित है।

21वीं सदी का युवा तकनीकी युग का प्रतिनिधि है। मोबाइल, सोशल मीडिया और इंटरनेट ने उसके जीवन को अभूतपूर्व गति दी है। संवाद सुलभ हुआ, शिक्षा के नए द्वार खुले, वैश्विक अवसर उपलब्ध हुए। किंतु हर प्रगति के साथ एक मूल्य भी चुकाना पड़ता है। आज भारतीय युवाओं का औसत स्क्रीन टाइम प्रतिदिन सात से आठ घंटे तक पहुंच चुका है। परिणामस्वरूप एकाग्रता में कमी, मानसिक तनाव, अवसाद की प्रवृत्ति, अकेलापन, शारीरिक निष्क्रियता तीव्र गति से बढ़ रही है। 2010 के बाद स्मार्टफोन के प्रसार ने खेल-आधारित बचपन को आभासी संसार में स्थानांतरित कर दिया। विश्व स्वास्थ्य संगठन और अमेरिका के सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के एक अध्ययन के अनुसार जिन बच्चों का स्क्रीन टाइम चार घंटे से ज्यादा है, उनमें अवसाद के लक्षणों की आशंका तीन गुना अधिक मिली। भारत में 61 प्रतिशत बच्चे दो वर्ष की आयु से पहले स्क्रीन देखना आरंभ कर देते हैं। जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार दो वर्ष तक की आयु के बच्चों को स्क्रीन से दूर रखा जाना चाहिए। आंखों में जलन, गर्दन-पीठ दर्द, मोटापा, अनिद्रा, चिंता जैसी समस्याएं उस 'डिजिटल धुएं' के दुष्परिणाम हैं, जो धीरे-धीरे बाल-मन को प्रभावित कर रहा है।

कुछ समय पूर्व सोशल मीडिया पर वायरल एक रील ने विचारणीय बिंदु सामने रखा। वायरल रील में देखा गया कि गली-मोहल्लों में क्रिकेट खेलते समय युवाओं ने अपने मोबाइल को एक स्थान पर रख दिए। खेल आरंभ होते ही वह पूरी तन्मयता से खेल के मैदान में डूब गए। सोशल मीडिया पर प्रसारित यह दृश्य संकेत देता है कि समस्या का समाधान असंभव नहीं है। वास्तव में आज भी फुटबॉल, हॉकी, कबड्डी, क्रिकेट, खोखो जैसे खेलों में वह क्षमता है, जो युवाओं को स्क्रीन से खेल के मैदान में ला सकती है। इसलिए अब स्क्रीन टाइम से प्लेग्राउंड टाइम का निर्धारण करना ही होगा।

'स्क्रीन टाइम से ग्रीन टाइम' का अभियान

अभाविप की कला, खेल, सेवा, पर्यावरण से जुडी गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। अभाविप ने 'स्क्रीन टाइम से ग्रीन टाइम' का अभियान आरंभ किया है। इसका उद्देश्य केवल स्क्रीन टाइम कम करना नहीं, बल्कि जीवन को प्रकृति, समाज और रचनात्मकता से जोड़ना है। इस अभियान के तहत पौधारोपण करने के साथ ही

युवाओं को चल शिविर के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर पर्यावरण को जानने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसके अलावा ग्रीन टाइम, डांस टाइम, गतिविधि टाइम, पेंटिंग टाइम जैसे अलग-अलग प्रयोग किए जा रहे हैं, जिससे स्क्रीन टाइम को लगातार कम किया जा सकेगा।

माता–पिता की भूमिका

बचपन व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला है। माता-पिता ने स्वयं खेल-आधारित बचपन जिया है। अतः उन्हें अपने बच्चों को बेहतर बचपन, वह भी धीरे-धीरे स्वतंत्रता एवं जिम्मेदारी के साथ देना होगा। बच्चों को हाई स्कूल से पहले सिर्फ बेसिक फोन देने के साथ ही अन्य अभिभावकों से समन्वय करना होगा। इसके साथ ही ग्रामीण दर्शन, चल शिविर, कैंपिंग, स्मार्टफोन-रहित बच्चों से मिलन आदि गतिविधियों से बच्चों को जोड़ना होगा।

विशेषज्ञों का मत है कि 18-24 माह तक स्क्रीन न्यूनतम होनी चाहिए। पांच-छह वर्ष तक सीमित उपयोग ही उपयुक्त है। मुक्त वातावरण में पलने वाले बच्चे अधिक आत्मविश्वासी, सक्षम और कम चिंतित होते हैं। भय और अति-सुरक्षा के कारण यदि उन्हें आभासी संसार में धकेलते हैं, तो यह भविष्य के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

शिक्षा परिसरों की जिम्मेदारी

विद्यालय केवल परीक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि जीवन-निर्माण की प्रयोगशाला है। अतः देश के अंदर सभी स्कूलों में फोन का उपयोग बंद करके गतिविधि को बढ़ावा देने की प्रबल आवश्यकता है। अधिकतर स्कूल में कक्षा के अंदर फोन प्रतिबंध लागू होने बाद भी छात्र चोरी-छिपे फोन का उपयोग करते हैं। ऐसी स्थिति से बचाव के लिए बेहतर यह होगा कि स्कूल के समय में फोन को लॉकर में रखकर बंद कर दिया जाए। स्कूलों में खेल-कूद से जुडी गतिविधियों को बढ़ावा देने के साथ ही नर्सरी से आठवीं कक्षा तक 'लेट ग्रो प्ले क्लब' अर्थात बच्चों को स्कूल से पहले या बाद में मिश्रित उम्र के बच्चों के साथ 'मुक्त खेल' का मौका दिया जाना चाहिए, जिससे बच्चों में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और सामाजिक कौशल आदि का स्वाभाविक विकास हो सके। कम निगरानी और खुला खेल बच्चों के सामाजिक कौशल, नेतृत्व क्षमता और आत्मनिर्भरता को विकसित करता है।

सरकार और नीति-निर्माण

डिजिटल सुरक्षा केवल व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं, बल्कि नीतिगत प्रश्न भी है इसलिए केंद्र और राज्य सरकारों को ऑनलाइन सुरक्षा की कमी को दूर करने के लिए ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया जैसे कानून लागू करने चाहिए। इनमें तकनीकी कंपनियों पर नाबालिगों के साथ वयस्कों से अलग व्यवहार करने और उनकी अतिरिक्त देखभाल का दायित्व होना चाहिए। बेहतर यह भी होगा कि केंद्र सरकार को इंटरनेट पर वयस्क होने की न्यूनतम आयु 16 वर्ष कर देनी चाहिए। इसके अलावा तकनीकी कंपनियां बेहतर आयु-सत्यापन सुविधा विकसित करें, जिससे अभिभावक अपने बच्चों के फोन एवं कंप्यूटर पर न्यूनतम आयु वाली साइटों को चिह्नित कर सकें, ताकि अवयस्क बच्चे को वह सब देखने से बचाव किया जा सके। इससे माता-पिता, बच्चों और प्लेटफॉर्मों की सामूहिक समस्याओं का समाधान किया जा सकेगा। राज्य सरकारें स्कूलों में मुक्त खेल-अवकाश को प्रोत्साहित करें।

समझना यह भी होगा कि मानव जाति पृथ्वी पर विकसित हुई है और बचपन शारीरिक खेलकूद-खोज के लिए बना है। बच्चे वास्तविक समाज में फलते-फूलते हैं, न कि आभासी नेटवर्क में। फोन आधारित बचपन चिंता, अलगाव और अकेलापन बढ़ाता है। इसलिए खेल-कूद से फोन की ओर का बदलाव विनाशकारी विफलता है, जिसे गंभीरता के साथ समझ कर कदम उठाने ही होंगे। 1968 के प्रयोग ने दिखाया कि संकट के समय मनुष्य प्रायः दूसरों की ओर देखता है। आज डिजिटल धुएं के बीच भी सभी एक-दूसरे की ओर देख रहे हैं। किंतु जीवन में परिवर्तन प्रतीक्षा से नहीं, पहल से आता है। मानव जाति पृथ्वी पर विकसित हुई है। बचपन खेल, गतिविधि, मस्ती, पढ़ाई,धूप और पसीने के लिए बना है-न कि केवल स्क्रीन की नीली रोशनी के लिए। यदि समय रहते संतुलन नहीं साधा, तो आभासी प्रगति वास्तविक जीवन की जड़ों को कमजोर कर देगी। ■

(लेखक, विकासार्थ विद्यार्थी के राष्ट्रीय प्रमुख हैं।)

'स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम' में सहायक अभाविप के आयाम

■ अजीत कुमार सिंह

वर्तमान डिजिटल युग में मोबाइल और डिजिटल उपकरणों की स्क्रीन युवाओं के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई है। शिक्षा से लेकर मनोरंजन तक अर्थात हर कार्य स्क्रीन के माध्यम से होने लगा है, जिसके दुष्परिणाम भी सामने आने लगे हैं। बच्चों से लेकर युवाओं में शारीरिक निष्क्रियता, मानसिक तनाव और अकेलेपन जैसी स्थितियों को देखा जा सकता है। डिजिटल उपकरणों के अंधाधुंध प्रयोग के कारण बौद्धिक, मानसिक एवं शारीरिक रूप से प्रभावित हो रहे युवाओं के स्क्रीन टाइम पर अंकुश लगाने संबंधी अभाविप अभियान 'स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम' न केवल प्रासंगिक है, बल्कि समय की मांग भी है। गत 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने 'स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम' अभियान का शुभारंभ किया।

युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद की जयंती पर आरंभ अभियान का उद्देश्य भी 'उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको' से प्रेरित है । देश की नई पीढ़ी में इंटरनेट एवं डिजिटल स्क्रीन के बढ़ते आकर्षण को कम करने एवं उन्हें प्रकृति, खेल, पर्यावरण, सेवा और संस्कृति से जोड़ने के लिए आरंभ किया गया यह अभियान वह सार्थक पहल भी है, जिसे गति प्रदान करने में अभाविप के आयाम, गतिविधि एवं कार्य की महत्वपूर्ण भूमिका को देखा जा सकता है। देश के युवाओं को अत्यधिक एवं तीव्र डिजिटल प्रवृत्ति से मुक्त करने के उद्देश्य से अभाविप लंबे समय से अपने विविध आयामों एवं गतिविधियों के माध्यम से यह कार्य करती आ रही है ।

विविध आयामों एवं गतिविधियों से जुड़े कार्यक्रमों के माध्यम से अभाविप न केवल युवाओं को डिजिटल लत से मुक्त कर सामाजिक एवं खेल गतिविधियों के लिए मैदान में ला रही है बल्कि उनमें सेवा भावना का विकास करने के साथ ही पर्यावरण के प्रति उन्हें उनकी जिम्मेदारी का अहसास कराते हुए उनकी रचनात्मकता को मंच भी प्रदान कर रही है।

'स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम' अभियान को फलीभूत करने के लिए अभाविप ने विद्यार्थियों से 'स्क्रीन टाइम टू ग्रीन टाइम', 'स्क्रीन टाइम टू फन टाइम', 'स्क्रीन टाइम टू प्ले टाइम' तथा 'मील विदाउट रील' का आह्वान किया है। अभाविप का आग्रह है कि बच्चे एवं युवा रोजाना अपने स्क्रीन टाइम में से कम से कम तीस मिनट घटाकर उसे प्रकृति एवं रचनात्मक कार्यों में लगाएं, जिससे उनके समग्र विकास में किसी भी प्रकार तकनीक बाधा उत्पन्न न होने पाए। 'स्क्रीन टाइम टू ग्रीन टाइम' अभियान में अभाविप आयाम 'विकासार्थ विद्यार्थी' की बड़ी भूमिका हो सकती है। कारण यह है कि विकासार्थ विद्यार्थी पहले से ही पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। विकासार्थ विद्यार्थी अभाविप का वह प्रयास है, जो छात्रों को आर्थिक एवं भौतिक विकास के साथ-साथ मानवीय विकास से जुड़े ऐसे मुद्दों की तरफ ध्यान आकृष्ट कराता है, जिससे जनसामान्य प्रभावित होता है। विकासार्थ विद्यार्थी की अवधारणा जल, जंगल, जमीन, जानवर एवं जन के उद्देश्य पर केंद्रित है। विकासार्थ विद्यार्थी के माध्यम से युवाओं को पर्यावरण संरक्षण, जल बचाओ अभियान, वृक्षारोपण और प्लास्टिक मुक्त परिसर जैसे कार्यक्रमों से जोड़ा जा रहा है। इसी प्रकार छात्रों-युवाओं में सेवा का भाव पैदा करने के उद्देश्य से 'सेवार्थ विद्यार्थी' कार्य कर रहा है।

2013 में आरंभ हुए 'सेवार्थ विद्यार्थी' के माध्यम से अभाविप द्वारा छात्र-छात्राओं को समाज में विभिन्न प्रकार के सेवा कार्य करने के लिए प्रेरित करने का कार्य किया जाता है। सेवा भाव से प्रेरित छात्र-छात्रा एक अच्छे नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर कर सामने आ रहे हैं। 'सेवार्थ विद्यार्थी' से जुड़े कार्यक्रम युवाओं को स्क्रीन टाइम को कम कर सेवा कार्य में जोड़ने में बेहतर विकल्प सिद्ध हो सकता है। 'सेवार्थ विद्यार्थी' से जुड़कर युवा उनके द्वारा चलाए जा रहे छोटे-छोटे बच्चों को शिक्षा देने वाले केंद्रों, कौशल केंद्र में सहयोग करने, रक्तदान करने, आपदा या दुर्घटना के समय पीड़ितों की सहायता करने, किसी बड़ी समस्या में सूचना एवं सहायता करने, नगरों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में आम लोगों से जुड़ी समस्याओं को सुलझा सकते है। इससे युवाओं में संवेदनाओं का विकास तो होगा ही, साथ ही उनके डिजिटल आकर्षण को भी कम किया जा सकेगा।

अभियान के अंतर्गत 'स्क्रीन टाइम टू फन टाइम' का साकार रूप प्रदान करने में अभाविप आयाम राष्ट्रीय कला मंच भी एक ऐसा मंच है, जो युवाओं को मनोरंजन के साथ-साथ कला, साहित्य, संगीत से जोड़ने में पूर्ण रूप से सक्षम है। 'राष्ट्रीय कला मंच' 2016 से युवाओं को न केवल मंच उपलब्ध कराती है बल्कि उसकी प्रतिभा को निखारने का कार्य भी करती है। गत फरवरी

माह में दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित मदारी कला उत्सव में युवाओं ने कला के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को जागृत किया। इसी तरह कला मंच द्वारा मुंबई में नेशनल स्टूडेंट्स फिल्म फेस्टिवल का आयोजन भी विद्यार्थियों की कलात्मक सृजनता के प्रदर्शन को निखारता है। कलात्मक सृजनता जहां विद्यार्थियों में संस्कृति का प्रचार-प्रसार करती है, वहीं प्रतिभाओं को मंच प्रदान करती है। नाटक, संगीत, नृत्य, साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार एवं राष्ट्र गौरव को जन-जन तक पहुंचाने की दिशा में कला मंच निरंतर प्रगतिरत है।

'स्क्रीन टाइम टू प्ले टाइम' आह्वान को गति प्रदान करने में अभाविप गतिविधि 'खेलो भारत' की उल्लेखनीय भूमिका को भी देखा जा सकता हैं। खेलो भारत गतिविधि भारतवर्ष के सभी विद्यालय, महाविद्यालय,

विश्वविद्यालय में भारतीय परंपरागत खेलों के माध्यम से छात्रों तक पहुंचकर खेलों के महत्व से अवगत करा रही है । ऐसे में भारतीय परंपरागत खेलों का पुनरुत्थान एवं ओलंपिक खेलों में भारतीय परंपरागत खेलों को स्थान मिले, ऐसी मानसिकता के साथ कार्यकर्ता 'खेलो भारत' गतिविधि के माध्यम से न केवल खेलों का प्रचार प्रसार कर रहे हैं, बल्कि भारतीय खेलों के लिए अवसर उपलब्ध कराकर युवाओं को स्क्रीन के स्थान पर भारतीय खेल संस्कृति को पुनर्जीवित करने का कार्य कर रही है। इसीलिए युवाओं को खेल के मैदान में उतार कर स्वस्थ जीवनशैली में 'खेलो भारत' महती भूमिका का निर्वहन कर सकता हैं। 'खेलो भारत' केवल प्रतिस्पर्धा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, टीम भावना, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता विकसित करना है।

मोबाइल और सोशल मीडिया पर बढ़ते समय को कम कर युवाओं को शारीरिक गतिविधियों की ओर प्रेरित करना इस पहल का मूल लक्ष्य है। छात्र जब मैदान में उतरते हैं, तो वह न केवल शारीरिक रूप से सशक्त बनते हैं, बल्कि मानसिक रूप से भी संतुलित और आत्मविश्वासी बनते हैं। इसी तरह 'मील विदाउट रील' के संकल्प को पूरा करने के लिए भी अभाविप कार्यरत है। समस्याओं को तंत्रज्ञान द्वारा सुलझाने की दृष्टि से 'डिपेक्स' भी स्क्रीन टाइम को संतुलित करने में सहायक है। डिपेक्स एक राज्यस्तरीय प्रतिस्पर्धा है, जहां इंजीनियरिंग, विज्ञान एवं कृषि विज्ञान के विद्यार्थी रचनात्मकता का परिचय देते हुए ऐसे मॉडलों का निर्माण करते हैं, जो विकास से जुड़े विविध क्षेत्रों के लिए उपयोगी होते हैं।

1986 में आरंभ हुए इस आयोजन में न केवल प्रदर्शनी, बल्कि विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिए विविध विषयों पर परिसंवाद, कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। महिला सुरक्षा की दृष्टि से छात्राओं-युवतियों के लिए आत्मरक्षा प्रशिक्षण 'मिशन साहसी' भी स्क्रीन टाइम को कम करने में सहायक है। यह प्रशिक्षण छात्राओं में आत्मविश्वास और सुरक्षा की भावना विकसित करता है। 'स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम' जैसा अभियान एक व्यापक सामाजिक सोच का परिचायक है। अभाविप के सेवा, पर्यावरण, खेल, कला और आत्मरक्षा जैसे विविध गतिविधि/कार्य/आयाम युवाओं को सक्रिय, अनुशासित और राष्ट्रनिर्माण के प्रति समर्पित बनाने के प्रयास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं। आवश्यकता यह है कि आभासी दुनिया से बाहर निकलकर छात्र एवं युवा वास्तविक जीवन की चुनौतियों और अवसरों को स्वीकार करें। यदि स्क्रीन समय का एक हिस्सा सक्रिय गतिविधियों में लगाया जाए, तो समाज और राष्ट्र दोनों को इसका सकारात्मक लाभ मिलेगा। अभाविप का 'स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम' अभियान इसी दिशा में एक सार्थक पहल है, जो भविष्य में रचनात्मक सामाजिक क्रांति के रूप में पहचानी जाएगी।

पर्यावरण संरक्षण के लिए एकजुट हुए युवा

विकासार्थ विद्यार्थी एवं पर्यावरण संरक्षण गतिविधि (पीएसजी) के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय पर्यावरण युवा संसद का आयोजन नागपुर स्थित विधान भवन में किया गया। युवा संसद का उद्घाटन राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय की कुलपति डा. मनाली क्षीरसागर ने किया। पर्यावरण युवा संसद में देशभर के विश्वविद्यालयों से लगभग दो सौ प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

दो दिवसीय युवा संसद में सेमिनार, कार्यशाला, पैनल चर्चा और नीतिगत विषयों पर विचार-विमर्श का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य विविध पृष्ठभूमि के युवाओं को शामिल कर समग्र और व्यावहारिक पर्यावरण समाधान विकसित करना था। युवा संसद के उद्घाटन सत्र में डा. मनाली क्षीरसागर ने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्रीय पर्यावरण युवा संसद युवाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने के साथ, उन्हें पर्यावरण की गंभीर चुनौतियों से निपटने के लिए संवाद, कार्य और पहलों में एकजुट करने का गतिशील मंच प्रदान करेगी।

गत 14 एवं 15 फरवरी को आयोजित युवा संसद कार्यक्रम का प्रास्ताविक प्रस्तुत करते हुए विकासार्थ विद्यार्थी की राष्ट्रीय संयोजक पायल राय ने बताया कि राष्ट्रीय पर्यावरण युवा संसद-2026 भारत के युवाओं में हरित नेतृत्व और पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित करने का एक परिवर्तनकारी प्रयास है। विकासार्थ विद्यार्थी द्वारा चलाए गए उपक्रमों में 'स्क्रीन टाइम से ग्रीन टाइम' अभियान शामिल है, जिसके अंतर्गत युवाओं को डिजिटल समय कम कर प्रकृति के साथ समय बिताने के लिए प्रेरित किया जाता है।

कार्यक्रम में अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री देवदत्त जोशी ने कहा कि विकासार्थ विद्यार्थी की गतिविधियां सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ पांच 'ज'- जल, जन, जंगल, जमीन और जानवर-पर कार्य करके युवाओं में पर्यावरण संरक्षण की भावना पैदा कर रही हैं।

जब युवा समाज में इस तरह की जागरूकता आएगी, तभी समाज सही दिशा और सतत विकास की ओर अग्रसर होगा।

कार्यक्रम के दूसरे एवं अंतिम दिन 'भारत के पांच आयामी परिवर्तन और जलवायु शासन में पारिस्थितिक बुद्धिमत्ता का उपयोग' एवं 'कॉप-30 में भारत और विश्व की भूमिका-भारतीय सभ्यतागत स्थिरता के मूल्यों के आधार पर वैश्विक जलवायु नेतृत्व' विषय पर चर्चा की गई। समापन सत्र में महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष राहुल नार्वेकर मुख्य अतिथि के रूप में तथा पद्मश्री जनार्दन पंथ बोथे विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

समापन सत्र में युवाओं को संबोधित करते हुए महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष नार्वेकर ने युवाओं की भूमिका को राष्ट्र निर्माण और पर्यावरण संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए युवाओं से सतत विकास के लिए नेतृत्वकारी भूमिका निभाने का आह्वान किया। विशिष्ट अतिथि पद्मश्री जनार्दनपंथ बोथे ने सेवा और समर्पण के माध्यम से प्रकृति संरक्षण को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के समापन सत्र में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए तथा उत्कृष्ट प्रस्तुतियों को सम्मानित किया गया। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

दिल्ली विश्वविद्यालय में 'मदारी' का आयोजन

कला महोत्सव में प्रतिभागियों ने किया प्रतिभा का प्रदर्शन

दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) नीत दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ और राष्ट्रीय कला मंच के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय 'मदारी-इस मिट्टी में जड़ें हैं हमारी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय कला मंच के राष्ट्रीय प्रमुख अंकित शुक्ला, अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री क्षमा शर्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय केंद्रीय पुस्तकालय के अध्यक्ष राजेश सिंह एवं दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष आर्यन मान ने किया।

गत 9 फरवरी से 11 फरवरी के मध्य आयोजित 'मदारी' कला महोत्सव को मुख्य रूप से खिचड़ी (नुक्कड़ नाटक), ग्राम्या (खुला मंच) और धरोहर (प्रदर्शनी) तीन भागों में बांटा गया। कार्यक्रम में आयोजित खिचड़ी में गार्गी महाविद्यालय, लेडी हार्डिंग, देशबंधु महाविद्यालय सहित कुल 38 टीमों ने नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति की। ग्राम्या के अंतर्गत 100 से अधिक प्रतिभावान कवियों और गायकों ने अपनी प्रस्तुति से सभी को मोह लिया, जबकि धरोहर के अंतर्गत मिरांडा हाऊस, हिन्दू महाविद्यालय, दौलतराम महाविद्यालय सहित कुल बीस महाविद्यालयों के छात्रों ने प्रदर्शनी के माध्यम से अपनी कला का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के अंतिम दिन विजेता टीम को क्रमशः 51 हजार, 31 हजार और 21 हजार की पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया गया।

अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान के अनुसार 'मदारी' वह मंच है. जहां पर नाटक समस्या के साथ समाधान की दिशा भी दिखाते हैं। यह कार्यक्रम कला, संगीत, नाटक, संस्कृति को बढ़ावा देने का कार्य करते हैं। राष्ट्रीय कला मंच युवाओं को स्क्रीन टाइम से प्ले टाइम की दिशा में ले जाने का कार्य कर रहा है, जो युवाओं को भारतीय कला, संस्कृति, संगीत की परंपरा के साथ देशहित में कार्य करने के लिए प्रेरित भी करता है।

राष्ट्रीय कला मंच के राष्ट्रीय संयोजक अभिनव सिंह ने बताया कि 'मदारी' केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज की गहरी सच्चाईयों को सामने लाने वाला एक मंच है। यह संवेदनशील अभिव्यक्ति का ऐसा सशक्त मंच है, जिसका उद्देश्य केवल अभिनय करना नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करना है।

कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाली राष्ट्रीय मंत्री कुमारी क्षमा शर्मा के अनुसार साहित्य और कला केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देश के युवाओं के अंदर राष्ट्रभक्ति का संचार करने का काम गीतों और कविताओं ने ही किया। जिस वंदे मातरम गीत की 150वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है, उस राष्ट्रीय गीत ने देश को एक सूत्र में पिरोने का काम किया। राष्ट्रीय कला मंच के राष्ट्रीय प्रमुख अंकित शुक्ल के अनुसार रंगमंच अभिव्यक्ति का माध्यम है। राष्ट्रीय कला मंच ऐसे देशभक्त युवा कलाकारों का सृजन करने का काम करता है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

नव परिवर्तन और वर्ष प्रतिपदा

■ संजय दीक्षित

सनातन हिन्दू नववर्ष का आरंभ आगामी 19 मार्च से हो रहा है। इसी तिथि से विक्रम संवत-2083 का प्रारंभ भी होगा। ज्योतिषीय गणना के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से प्रारंभ होने वाले नवसंवत्सर का नाम 'रौद्र' संवत्सर है। चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (पहली) तिथि से आरंभ होने वाले नववर्ष के सन्दर्भ में 'वर्ष प्रतिपदा' का अर्थ 'वर्ष का पहला दिन' और नव संवत्सर का अर्थ 'नया संवत' से है। प्रकृति में एक ऋतुचक्र के पूर्ण होने में लगनेवाले कालखंड को भारतीय वैचारिकी में 'संवत्सर' का नाम दिया गया है। वस्तुतः संवत्सर वह समय होता है, जिसमें पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेती है। सूर्य, चंद्रमा तथा नक्षत्र, तीनों की समन्वित स्थिति पर संवत्सर आधारित होता है।

भारतीय संस्कृति में विक्रम संवत वह प्राचीन एवं विज्ञान सम्मत चंद्र-सौर कैलेंडर है, जिसे प्राचीन भारत में 57 ईसा पूर्व सम्राट विक्रमादित्य ने आरंभ किया था। भारतीय भूमि पर विदेशी आक्रांताओं के रूप में आए शकों को पराजित करने के बाद सम्राट विक्रमादित्य ने 'विजय' की स्मृति एवं वीरता के प्रतीक स्वरूप विक्रम संवत को आरंभ किया। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में विक्रम संवत को राष्ट्रीय संवत के रूप में अपनाया गया।

हिन्दू परंपरा बताती हैं कि सृष्टि के रचियता ब्रह्मा ने इसी दिन ब्रह्मांड की रचना प्रारंभ की। ब्रह्मपुराण पर आधारित ग्रन्थ कथा कल्पतरु में बताया गया है कि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना आरंभ की और उसी दिन से सृष्टि संवत की गणना आरंभ हुई। भारतीय काल गणना के अधिकांश संवत्सर इसी दिन से प्रारंभ होते हैं। खगोलीय दृष्टि से विचार करे तो यह दो खगोलीय पिंडों की कलाओं में पूर्ण सामंजस्य रखते हुए ऐसी ऋतु से प्रारंभ होता है, जब सूर्य भूमध्य रेखा पर होता है और पृथ्वी पर वातावरण सर्वथा सम होता है। इसी दिन से भारतीय कालगणना एवं वासन्तिक नवरात्र पर्व का आरम्भ भी होता है। वैदिक धर्मग्रंथों एवं साहित्य के अनुसार भगवान श्रीराम का राज्याभिषेक एवं महाभारत काल में हुए धर्मयुद्ध में धर्म की विजय का जयघोष भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन हुआ था। यह वह काल होता है, जब वसन्त की मधुरता और सौन्दर्य सम्पूर्ण धरा पर प्रफुल्लित हो रहा होता है।

ज्योतिष चक्र के अनुसार वसंत ऋतु में सूर्य अपनी राशि-चक्र की प्रथम राशि मेष में प्रवेश करता है। भारतवर्ष में यह वह समय होता है, जब वसन्त ऋतु के कारण सम्पूर्ण धरा हरी-भरी होती है और नवीन पत्र-पुष्पों द्वारा प्रकृति का नव श्रृंगार किया जाता है। भारत के विभिन्न राज्यों में नव संवत्सर पर्व को अलग-अलग नाम से जाना एवं मनाया जाता है। वसंत ऋतु के आगमन एवं भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों को दर्शाते हुए यह पर्व आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में 'युगादि' अर्थात युग का शुभारंभ, महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा अर्थात विजय का प्रतीक, असम में बोहाग बिहू या रोंगाली बिहू, पश्चिम बंगाल में पोइला बोइशाख, तमिलनाडु में पुथांडु, पंजाब में बैसाखी, कश्मीर में नवरेह, सिंधी समाज में चेटीचंड एवं मणिपुर में साजिबू चीराओबा के नाम से मनाया जाता है। वसंत ऋतु के यह सभी पर्व भारत में पारंपरिक नववर्ष के आरंभ होने के साथ ही हिन्दू सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक हैं। सनातन वैचारिकी में नव संवत्सर मात्र एक तिथि नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति, परंपरा एवं गौरव का प्रतीक है, जो प्रत्येक वर्ष आत्मशुद्धि, नए दृष्टिकोण, नए संकल्प, नई उमंग और नई ऊर्जा के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देने के साथ ही भारतीय धर्म-संस्कृति की अमूल्य परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाने का संदेश देता है।

नव-संवत्सर एवं काल गणना

सनातन वैचारिकी में काल को गतिशीलता का पर्याय माना गया है और नव संवत्सर का आधार भी यही गतिशीलता का चिन्तन है। पृथ्वी की गति पर आधारित

काल गणना में क्रमशः प्रहर, दिन-रात, पक्ष, अयन, संवत्सर, दिव्यवर्ष, मन्वन्तर, युग, कल्प और ब्रह्मा की गणना की जाती है। प्राचीन और आधुनिक काल-गणना का मुख्य आधार भारतीय ज्ञान है। भारतीय काल गणना की विशेषता यह भी है कि यह अत्यंत सूक्ष्म है, जिसमें 'त्रुटि' से लेकर प्रलय तक की काल गणना की जा सकती है।

हिन्दू वैचारिकी में समय एक सीधी रेखा के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे चक्र के रूप में देखा जाता है, जो निरंतर नवगठित होता रहता है। समय की रैखिक अवधारणा के पश्चिमी विचार के विपरीत, हिंदू दर्शन चक्रीय दृष्टिकोण को अपनाता है, जिसका प्रतीक चार युग हैं-सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि। प्रत्येक युग मानव सद्गुण के चक्र में एक विशिष्ट चरण का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें सृष्टिकर्ता भगवान ब्रह्मा की केंद्रीय भूमिका है और समय को उनके दिव्य दिनों एवं वर्षों में मापा जाता है। भारत की काल गणना में दिन, तिथि, नक्षत्र, योग और करण इन पांच बिन्दुओं का ज्ञान मिलता है, इसलिए इसका नाम पंचांग है। भारत की कालगणना सूर्य, चन्द्रमा एवं पृथ्वी की गति के आधार पर ही नहीं, बल्कि इसमें अंतरिक्ष के सभी प्रमुख ग्रहों की गति और उनके प्रभाव का आकलन होता है।

भारतीय काल-गणना कल्प, मन्वंतर, युगादि के पश्चात् संवत्सर से प्रारंभ होती है। डा. डी. डी. ओझा एवं रवींद्र कुमार ने अपनी पुस्तक प्राचीन भारत में विज्ञान में बताया है कि भारतीय काल-गणना का पुण्य प्रवाह जहां कल्पाबद्ध संवत 1 अरब 97 करोड़ 29 लाख 85 हजार 108 वर्ष, सृष्टि संवत 1 अरब 95 करोड़ 20 लाख 85 हजार 108 वर्ष, श्रीराम संवत 1 करोड़ 25 लाख 69 हजार 108 वर्ष, श्रीकृष्ण संवत 5 हजार 232 वर्ष, विक्रम संवत 2078 वर्ष से प्रवाहित है। भारतीय काल गणना की सबसे छोटी इकाई कलियुग की है, जोकि 4 लाख 32 हजार वर्ष का है। वर्तमान काल श्वेत वाराह कल्प के वैवस्वत मन्वतंर का अठ्ठाइसवां कलियुग है। काल गणना से जुड़े विभिन्न तथ्यों एवं सिद्धांतों को वैदिक ग्रंथों से लेकर अनेकों पुस्तकों के माध्यम से सूक्ष्म रूप से जाना-समझा जा सकता है।

भारतीय कालगणना की एक विशेषता यह है कि इसमें एक निरंतरता प्राप्त होती है। प्राचीन भारतीय ज्योतिषविदों द्वारा सूर्य, चन्द्र एवं पृथ्वी की गति के आधार पर की गई काल गणना वैज्ञानिक विधियों से पूर्णतः परिपूर्ण है। काल गणना में संवत्सर की उत्पत्ति वर्ष गणना के लिए होती है। ऋतु मास, तिथि सब वर्ष के ही अंग माने जाते हैं। विस्तृत काल गणना को और अधिक व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक रूप देने के लिए समय को घड़ी, पल, विपल, प्रतिपल, लव, रेणु, टिकाल आदि इकाइयों में विभाजित किया गया है। हर इकाई का अगला रूप 60 गुना बढ़ा हुआ होता है। यह प्रणाली बताती है कि भारत में काल का अत्यंत सूक्ष्म स्तर पर किया जाना वाला अध्ययन किसी भी आधुनिक घड़ी की सूक्ष्मता से पीछे नहीं है। भारतीय काल गणना में ब्रह्माण्ड की रचना और उसके कालचक्र को समझाने की अद्वितीय क्षमता है।

भारत की काल गणना सूर्य एवं चंद्र दोनों की गति पर आधारित सबसे प्राचीन काल गणना है। यह खगोल सिद्धांत व ब्रह्मांड के ग्रहों-नक्षत्रों की गति पर आधारित है। विक्रम संवत में नक्षत्रों, ऋतुओं, मासों एवं दिवसों आदि का निर्धारण पूरी तरह प्रकृति पर आधारित विज्ञान के माध्यम से किया गया है। ऐसी सूक्ष्म काल गणना विश्व की किसी और सभ्यता में नहीं प्राप्त होती है।

हिन्दू संस्कृति का प्रवाह

प्राचीन काल से ही सनातन हिन्दू संस्कृति के अन्तस से एक ऐसी उच्छल धारा प्रवाहमान है जो उत्तर-दक्षिण, पूर्व पश्चिम को एक सूत्र में पिरोने में समर्थ रही है। इसी कारण सनातन हिन्दू संस्कृति का प्रवाह प्राचीन काल से विश्व के अनेकों हिस्सों में हुआ। प्रकृति आधारित जीवन पद्धति पर केंद्रित हिन्दू संस्कृति एक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति के रूप में जानी जाती है। आध्यात्मिकता, सहिष्णुता, एकता और प्रकृति केन्द्रित जीवन धारा से जुड़े ज्ञान के माध्यम से हिन्दू संस्कृति ने विश्व को शांति, प्रेम और मानवता का संदेश दिया। प्राचीन काल से ही भारतीय विद्वान, विचारक एवं व्यापारी विश्व के अनेक हिस्सों में जाकर भारतीय धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते रहे हैं। इसका एक और ऐतिहासिक प्रमाण मिस्र स्थित राजाओं की घाटी से प्राप्त हुए हैं।

नील नदी के पश्चिमी तट पर स्थित राजाओं की घाटी का उपयोग लगभग 1539 ईसा पूर्व से लेकर

1075 ईसा पूर्व तक एक कब्रिस्तान के रूप में किया जाता था। पुरातत्वविदों को अब तक यहां 63 मकबरे प्राप्त हुए हैं। इसी घाटी में दो हजार वर्ष पुराने तीस से अधिक प्राचीन भारतीय शिलालेख भी मिले हैं। इनमें से कई शिलालेख तमिल-ब्राह्मी लिपि में हैं। इससे पहले मिस्र के लाल सागर तट पर स्थित प्राचीन 'बेरेनिके' बंदरगाह पर मिले तमिल-ब्राह्मी शिलालेखों ने प्रथम से लेकर तृतीय शताब्दी ईसवीं के समय दक्षिण भारत और रोमन साम्राज्य के आपसी व्यापारिक संबंधों को सामने रखा था।

राजाओं की घाटी में मिले तमिल-ब्राह्मी लिपि वाले शिलालेखों की खोज फ्रांसीसी स्कूल ऑफ एशियन स्टडीज (एएफएओ) की प्रोफेसर शार्लोट श्मिड और स्विट्जरलैंड स्थित लॉज़ेन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर इंगो स्ट्रॉच द्वारा 2024-2025 में की गई, जिसकी विस्तृत जानकारी प्रो. इंगो स्ट्रॉच ने चेन्नई में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय तमिल पुरालेख सम्मेलन में प्रस्तुत अपने शोधपत्र के माध्यम से सामने रखी। राज्य सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा गत 11 से लेकर 14 फरवरी तक आयोजित चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय तमिल पुरालेख सम्मेलन में स्विट्जरलैंड, फ्रांस, श्रीलंका सहित कई देशों के पचास से अधिक विद्वानों ने हिस्सा लिया।

मिस्र में मिले लगभग 30 तमिल-ब्राह्मी और प्राकृत शिलालेखों के अध्ययन के बाद प्रो. स्ट्रॉच ने अपने शोधपत्र 'फ्रॉम द वैली ऑफ़ किंग्स टू इंडिया : इंडियन इंस्क्रिप्शन्स इन इजिप्ट' के माध्यम से बताया कि यह शिलालेख हजारों वर्ष पूर्व दक्षिण भारत और रोमन मिस्र के मध्य गहन व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंधों को दर्शाते हैं। साथ ही यह सिद्ध करते हैं कि प्राचीन काल में भारतीय व्यापारी व्यापार के लिए मिस्र के अंदरूनी क्षेत्रों तक जाते थे। राजाओं की घाटी में प्राप्त हुए अभिलेखों में तमिल-ब्राह्मी के अलावा प्राकृत और संस्कृत भाषा का भी प्रयोग किया गया है। मीडिया में आई जानकारी के अनुसार एक तमिल व्यापारी, सिकाई कोट्रान का नाम पांच अलग-अलग पिरामिडों में आठ बार मिला है। इसके अलावा पहचाने गए अन्य तमिल नामों में कोपन, कैटन और किरण शामिल हैं, जिनका विवरण दक्षिण भारत के आरंभिक तमिल शिलालेखों में भी मिलता है।

विश्व के विभिन्न देशों में रहने वाली विभिन्न संस्कृतियों के साथ हिन्दू संस्कृति के संपर्क को सामने लाने वाला यह कोई पहला उदाहरण नहीं है। प्राचीन काल से ही भारतीय व्यापारी विश्व के अनेक देशों तक पहुंच कर भारत में पैदा होने वाले खान-पान सम्बन्धी मसालों, रेशमी वस्त्रों से लेकर अनेक वस्तुओं का व्यापार करते रहे हैं। ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि कठिन परिस्थितियों के बाद भी भारतीय व्यापारी मिस्र, यूनान, रोम, इराक, ईरान, जावा, सुमात्रा, बाली सहित चीन एवं रूस तक जाते थे। व्यापार की यह प्रक्रिया भूमि एवं जलमार्ग, दोनों माध्यम से संपन्न होती थी। जल मार्ग से यात्रा करने वाले भारतीय व्यापारियों ने मिस्र एवं यूनान में अपने संबंध तक स्थापित किए। इन्हीं भारतीय व्यापारियों के साथ में अनेक धर्माचार्य, विद्वान, विचारक भी अनेक देशों तक पहुंचे और भारतीय धर्म-संस्कृति के प्रचार-प्रसार के संवाहक बने।

डा. शरद हेबालकर ने अपनी पुस्तक 'भारतीय संस्कृति का विश्व संचार' में लिखा है कि भारत वृत्ति से कभी व्यापारी नहीं रहा। भारतियों ने व्यापार को कभी भी प्रधान लक्ष्य नहीं माना। उनका लक्ष्य था भारतीय संस्कृति का प्रसार। इस प्रसार कार्य की भी उनकी एक प्रणाली थी। शस्त्र-बल से बलात मतान्तर करने का विचार कभी भी उनके मन में नहीं आया। मूल बात यह है कि जब भारतीय वीर अपनी संस्कृति का शुभ संदेश लेकर चले, तब ईसा मसीह का जन्म नहीं हुआ था। पैगंबर मुहम्मद का जन्म तब से सैकड़ों वर्ष बाद हुआ।

मिस्र में मिले शिलालेख यह बताने के लिए काफी हैं कि विश्व के अनेक देशों में सनातन संस्कृति के प्रचार-प्रसार को सत्य, कानून और धर्म की दिग्विजय के रूप में देखा जा सकता है। सनातन संस्कृति के प्रभाव से एक विलक्षण विशाल सांस्कृतिक साम्राज्य स्थापित हुआ, जिसमें अन्य देशों में रहने वाले लोग सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन में समभागी बने। वैश्विक देशों में जहां भी भारतीय अस्थायी रूप से बसे, वहां उन्होंने स्थायी मौलिक तत्वों के साथ एक नवीन संस्कृति का विकास किया, जिस पर भारतीय संस्कृति का पूरा प्रभाव था। यही कारण है कि विश्व की अनेक सभ्यताओं और संस्कृति के उद्भव और निर्माण में हिन्दू संस्कृति के विशेष योगदान को देखा जा सकता है। ■

राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा से ओतप्रोत परिषद 'गीत धारा'

■ डा. रवि रमेश चन्द्र शुक्ल

आज जब देश वंदे मातरम का 150वां वर्ष मना रहा है, ऐसे में युवाओं की स्वरलहरी में व्याप्त बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की आनंदमठ वाली प्रेरणा की झलक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के गीतों में देखी जाती है। बंकिम चंद्र के वंदे मातरम गीत ने वैचारिक अधिष्ठान दिया, जिसने देशवासियों को एकसूत्र में पिरोकर उन्हें स्वतंत्रता का दिग्दर्शक स्वर दिया था। विश्व के सबसे बड़े, प्रभावी एवं संगठित छात्र आंदोलन के रूप में अभाविप ने 1949 से युवाओं को सशक्त बनाने के लिए विभिन्न आयामों, दृष्टिकोण और रणनीतियों का प्रयोग किया है। अभाविप के माध्यम से भारत के युवा विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रीयता और संस्कृति की मुख्यधारा से जुड़ते हैं। संगठन ने युवाओं को व्यक्तित्व विकास और अपनी साहित्यिक प्रतिभा का संचार करने का प्रोत्साहन दिया है, जिसका एक स्वरुप गीतों की रचना, प्रस्तुतीकरण और उनसे मिली प्रेरणा के रूप में 1949 से अनवरत विकसित हुआ है। 'गीतधारा' में संकलित यह गीत राष्ट्रीय अस्मिता के गायन और भारतीय विचार, परम्पराओं और संकट के प्रत्युत्तर का प्रयास है। यह गीत स्वतंत्र भारत में छात्रों के संघर्ष और राष्ट्रीय अस्मिता को सुदृढ़ करने का प्रयास है। इनमें राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता, युवा विकास और शैक्षिक सुधार के विषय प्रमुखता से उभरते हैं।

1962 में चीन के आक्रमण के बाद युद्ध में हार के दुखद परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी और राष्ट्र का मनोबल गिर गया था। जिस समय चीन ने हिमालयी क्षेत्र पर आक्रमण किया था, उस समय देश की कमजोर राजनीतिक इच्छाशक्ति ने युवाओं का मनोबल कमजोर कर दिया, जिसे पुनः सशक्त बनाने की अवधारणा में 1963 में ग्वालियर में हुए अभाविप के 11वें राष्ट्रीय अधिवेशन में 'भारत का उत्थान' नामक गीत प्रस्तुत किया गया। गीत का उद्देश्य युवाओं के नैतिक मूल्यों के साथ राष्ट्र के प्रति समर्पण को बढ़ावा देना था। प्रतीकात्मक रूप में गीत महाभारत की ऐतिहासिक शौर्य परंपरा का स्मरण कराता है, जिसमें प्रतीकात्मक अर्जुन के धनुष-बाण (गांडीव) को शक्ति पुंज और श्रीकृष्ण के शंख (पाञ्चजन्य) को बुद्धि और चेतावनी के प्रतीक स्वरुप दर्शाया गया है।

जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान।
प्राची की चंचल किरणों पर आया स्वर्ण विहान।।
स्वर्ण प्रभात खिला घर-घर में जागे सोये वीर
युद्धस्थल में सज्जित होकर बढ़े आज रणधीर
आज पुनः स्वीकार किया है असुरों का आह्वान।।

इस गीत के माध्यम से युवा पीढ़ी को वामपंथी चीन द्वारा भारतीय क्षेत्र पर कब्जा करने की मंशा के प्रति सावधान रहने की चेतावनी दी गई थी। यह गीत भारत के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करता है।

इसी प्रकार का एक अन्य गीत अभाविप के 15वें राष्ट्रीय अधिवेशन में 1967 में इंदौर में प्रस्तुत किया गया। 'चल रहे हैं चरण अगणित, ध्येय के पथ पर निरंतर' गीत उस समय लिखा और गाया गया, जब देश महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों का सामना कर रहा था। यह वह समय था जब 'खाद्य संकट,' भाषाई एवं क्षेत्रीय मुद्दे प्रभावी थे। अभाविप 'हिप्पी आंदोलन, वामपंथी चरमपंथ-'नक्सली हिंसा' के समक्ष मजबूती से खड़ी रही और छात्रों में राष्ट्रवाद का अमृत सिंचन करती रही। कविता की पहली पंक्ति युवाओं को भारतीय सभ्यता से जोड़ती है। इसमें लिखा है-

श्रेष्ठ जीवन की धरोहर पूर्वजों से जो मिली है,
विश्व को सुख-शांति दात्री, जो यहां संस्कृति पली है।
है उसे रखना, निरंतर मृत्यु का भी सर कुचल कर

यह भाषाई और राजनीतिक उपराष्ट्रीयता की बढ़ती लहर के विरुद्ध राष्ट्रवादी चिंता का स्वर था। इस गीत ने युवाओं को याद दिलाया कि उन्होंने हूण, सीथियन, यूनानी, मुगल और अन्य बर्बर सेनाओं को पराजित किया है। कोलकाता में 1969 में 17वें राष्ट्रीय अधिवेशन में 'जय भारती, जय भारती' गीत प्रस्तुत किया गया, जिसने युवाओं की शक्ति और विकास का पोषण किया।

इसी तरह 1967 में हुए राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत रचना द्वारा युवाओं से 'सकारात्मक और समान' रहकर 'शांति, समृद्धि और प्रगति' के लिए भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और सभ्यतागत धरोहर को न खोने का आह्वान किया गया। राष्ट्र सेवा की प्रेरणा देने वाला एक और गीत है, जिसकी पंक्तियां हैं-'पथ का अंतिम लक्ष्य नहीं है, सिहांसन चढ़ते जाना' इस गीत को 1978 में बेंगलुरु में संपन्न हुए 24वें राष्ट्रीय अधिवेशन में गाया गया।

पथ का अंतिम लक्ष्य नहीं है, सिंहासन चढ़ते जाना।
सब समाज को लिए साथ में, आगे है बढ़ते जाना।

जिस समय पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार ने 1975 में देश पर आपातकाल थोप दिया, उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस), जनसंघ और अन्य सामाजिक-राजनीतिक समूहों के नेताओं एवं कार्यकर्ताओं को मीसा के अंतर्गत जेल में बंद कर दिया गया। 23 हजार से अधिक संघ के स्वयंसेवक और अभाविप कार्यकर्ता कैद कर लिए गए। 1977 में दमनकारी काल के अंत के बाद युवाओं को स्वतंत्रता की नई हवा में सांस लेने और सामाजिक सुधार और राष्ट्र-निर्माण के अपने अभियान को पुनः शुरू करने का संकल्प मिला। 1977 में वाराणसी में हुए 23 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत गीत था-

युग युग के स्वप्न संजोए, जो हमें पूरा कर दिखलाना।
फिर रामराज्य है भारत के, उजड़े कानन में विकसाना।।

इसी तरह 1978 में बेंगलुरु के 24 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत गीत ने जनता के जेल में बिताए कष्टों को याद किया। 1981 में कर्नाटक के हुबली में 27वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत संगीत ने युवाओं को राष्ट्र की महानता को पहचानने और उसकी शक्ति और गौरव में सहभागी बनने का संदेश दिया।

देश की मशाल उठा जवान रे, ताप दो, प्रकाश दो, गति महान रे।
ज्ञान शील एकता की धारणा लिए
छात्रशक्ति राष्ट्रभक्ति भाव लिए
जाग जाग भारती के भगवान रे।।

1980 में देश फिर एक निर्णायक मोड़ पर था। खालिस्तानी अलगाववादियों ने पंजाब को हिंसा की आग में झोंक दिया था। पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी और अलगाववादी संगठनों ने कश्मीरी पंडितों और अन्य हिंदू समाज के लोगों का संगठित नरसंहार शुरू कर दिया। उत्तर-पूर्व भारत की अखंडता खतरे में थी। नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और असम में अलगाववादी आंदोलनों की साजिश चल रही थी। उसी समय सरकार ने अपने नियंत्रण कड़े करने का फैसला किया क्योंकि जरनैल सिंह भिंडरावाले और खालिस्तानी आतंकवाद भारत की अखंडता और संप्रभुता को सीधे खतरे में डाल रहा था। इसी कारण 1983 में भारत की आंतरिक सुरक्षा को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। 29वें राष्ट्रीय अधिवेशन में गाए गए इस गीत ने युवाओं से हिंसा से दूर रहने और विकास के रचनात्मक रास्ते अपनाने की अपील की।

युवा शक्ति को 'मजबूत और एकीकृत' भारत के विचार से प्रेरित करने के लिए, 1981 में एक गीत प्रस्तुत किया गया। इस गीत का अंतिम पद, जिसमें आशावान युवा को एकजुट करने का उद्देश्य एवं प्रेरणा थी। इसमें लिखा गया था-

काल की चुनौतियों का सामना करें
भानु बनकर देश के तिमिर को हरें
भारती प्रकाश से पगे जहान रे।
भारतीयता का भाव देश में जगे
मानवी समग्रता से विश्व जगमगे
कुटुंब है वसुधा, भरत महान रे।

इस गीत का संदेश दुनिया में अंधकार को दूर करने और अपने मन को सूरज की तरह उज्ज्वल बनाने के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्र कंटकों को उनके मूल से उखाड़ फेंकने और भारतीय आदर्शों को पुनः स्थापित करने की प्रेरणा इस गीत में समाहित है। साथ ही यह सन्देश है कि 'वसुधैव कुटुंबकम' की अपनी प्राचीन परंपरा को कभी नहीं भूलना चाहिए।

गगन में गड़गड़ाहटें, धरा पे चक्रवात है,
संभालो अपने देश को रे, दुश्मनों की घात है।

भारत के लिए बढ़ती अस्थिरता को एक काली रात के रूप में दर्शाने वाला यह गीत युवाओं और समाज को एकजुट होने और अपनी सभी भिन्नताओं को भुलाकर

देश की रक्षा के लिए प्रेरित करता है।

इसी तरह, 1992 में कानपुर में 38वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत गीत सामाजिक सुधारों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की भावना को दर्शाता है। उल्लेखनीय है कि 1989 के बाद भारत ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तन का अनुभव किया। यह वह समय था, जिसमें राजनीतिक अस्थिरता व्याप्त थी। इस अस्थिरता से देश की आंतरिक अस्थिरता और वाह्य सुरक्षा को खतरे से बचने का आह्वान 'चलो जलाएं दीप वहां, जहां अभी भी अंधेरा है' गीत के माध्यम से किया गया।

1991 में जयपुर में 37वें राष्ट्रीय अधिवेशन में गाए गए गीत में उत्साह और साहस भरा था, जो युवाओं से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों की लहरों पर सवारी करने का आग्रह करता है। गीत में अभाविप की भारत की सामाजिक एकता और राष्ट्रीय अखंडता की रक्षा करने की प्रेरणा थी। यह गीत इस प्रकार है-

भारती की चिर विजय का नाद नभ में भर रहा।
ध्वनि पणव का धिनीनी धिक् धिक्, प्रिय शुभंकर बज रहा।।
केसरी ध्वज की प्रभा से मुक्त, अंबर सज रहा।
युवक गण कटिबद्ध होकर, जलधि में बिंदुत्व खोकर
संचलन से नभ निरंतर, कंप कंपित कर रहा ।।

इसके बाद के दो पद युवाओं को आशावाद, आत्मविश्वास और भारत को एक समृद्ध राष्ट्र बनाने की इच्छा को प्रेरित करते हैं। 1996 में बेंगलुरु में आयोजित 42वें राष्ट्रीय अधिवेशन का यह गीत दर्शाता है कि 'राष्ट्र धर्म' (देशभक्ति) सबसे बड़ा और प्रत्येक धर्म से ऊपर है। भूमंडलीकरण के युग में सामाजिक सद्भाव और राष्ट्र निर्माण को प्रोत्साहित करना अभाविप के लिए एक चुनौती था। इस विचार को इस गीत के अगले पद में दर्शाया गया है-

देशधर्म का मान करें, संस्कृति का सम्मान करें।
जीवन सफल बना दें हम सब, एक नया निर्माण करें
हम राष्ट्र पुनर्निर्माण करें।।

यह गीत भारत की स्वतंत्रता के 50वें वर्षगांठ का उत्सव भी था। गठबंधन राजनीति, राजनीतिक अर्थव्यवस्था में बदलाव, पश्चिमी सांस्कृतिक आक्रमण और तथाकथित प्रगतिशील शिक्षाविदों ने सरकार को गंभीरता से खतरे में डाल दिया था। ऐसे समय में 1997 में चेन्नई में आयोजित 43 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का यह गीत युवाओं में नई ऊर्जा के संचार का प्रयास था-

राष्ट्र की जय चेतना का गान वंदे मातरम
राष्ट्रभक्ति प्रेरणा का गान वंदे मातरम

एक अन्य 'ज्ञान-शील-एकता मंत्र गूंजता रहा' नामक गीत 1998 में मुंबई में 44वें राष्ट्रीय अधिवेशन में गाया गया। यह 1997 के गीत के 'संकल्प' से जुड़ा था। यह गीत चेतावनी देता था कि बढ़ती स्वार्थी प्रवृत्ति देश के आधारों पर हमला कर रही है, इसलिए युवाओं को देश सेवा के लिए तैयार रहना चाहिए।

ज्ञान शील एकता मंत्र गूंजता रहा
छात्र राष्ट्र-भक्ति से देश जागता रहा
चेतना स्वदेश की, सामना विदेश का
तन, मन, धन मोल दे रक्षण हो देश का
मातृभूमि के लिए साधना में जुट रहा।

यह सुसंगत गीत उस समय की स्थिति को बेहतर ढंग से व्यक्त करता है। इस गीत से युवा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से प्रेरित होकर विश्व को एकता का संदेश देता है।

'राष्ट्र भक्ति ले हृदय में' नामक गीत को 2000 में रायपुर में 46वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया। यह गीत युवाओं में उमंग और ऊर्जा भरता है। गीत की पंक्तियां युवाओं में जागरूकता और संवेदना का जागरण कराती हैं।

राष्ट्र भक्ति ले हृदय में, हो खड़ा यदि देश सारा
संकटों पर मात कर यह, राष्ट्र विजयी हो हमारा
क्या कभी किसी ने सुना है, सूर्य छिपता तिमिर भय से
क्या कभी सरिता रुकी है, बांध से वन पर्वतों से

इसी तरह देशभक्ति का संदेश देने वाला प्रेरणादायक गीत है-'देश जागे, देश जागे', जिसे कोझिकोड में 2002 के 48वें राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान प्रस्तुत किया गया था।

देश जागे, देश जागे मंत्र सब गूंजा रहे हैं,
मातृ मंदिर के पुजारी, एक स्वर में गा रहे हैं
जिसकी चिंगारी हृदय में प्रेरणा साहस जगा दे,
और तन-मन का सहजतम मोहमय भ्रम सब मिटा दे

राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य का समर्थन करने के लिए,

यह गीत युवाओं को सम्मान और प्रभाव का अधिकार दिलाता है। 2005 में भोपाल में आयोजित 51वें राष्ट्रीय अधिवेशन के गीत का सुर भी इसी तरह का था। 2006 में हैदराबाद में 52वें राष्ट्रीय अधिवेशन सत्र में प्रस्तुत 'मन मस्त फकीरी धारी है, अब एक ही धुन जय-जय भारत' गीत तत्कालीन समय में भारत पर होने वाले आतंकवादी हमलों के प्रति एक सशक्त बयान था। ऐसे में सभी जातियों, समुदायों, धर्मों और सामाजिक वर्गों के युवाओं को 'शामिल करें, सामंजस्य बनाएं और जुड़े रहें' के नारे के साथ अभाविप ने राष्ट्र निर्माण में सम्मिलित करने का संकल्प लिया। 2009 में महाराष्ट्र के जलगांव में 54वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत गीत -

नौजवान जागो रे नौजवान जागो रे
दुश्मनों को देश की जमीन से निकाल दो
राष्ट्र का विजय निशान व्योम में उछाल दो

न केवल एक कविता है, जो अभाविप की प्रस्तुतियों में राष्ट्रीय चेतना का प्रकटीकरण है। राष्ट्रीय एकता फिर एक बार 'हम छात्रशक्ति के प्रखर पुंज' गीत में व्यक्त की गई, जो 2009 में ऊना (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित 55वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया। 2012 में पटना के 58वें राष्ट्रीय अधिवेशन का संदेश था कि युवाओं को देश का नेतृत्व करना चाहिए। आत्मनिर्भरता और पर्यावरण संरक्षण भी इस गीत में चर्चा का विषय रहा।

तरुण वीर देश के मूर्त वीर देश के
जाग-जाग-जाग रे मातृ भू पुकारती
शत्रु अपने शीश पर आज चढ़के बोलता
शक्ति के घमंड में देश मान तोलता

इस प्रकार विचार करने पर पता चलता है कि अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशनों में प्रस्तुत अधिकांश गीतों का मुख्य विषय देशभक्ति से ओतप्रोत रचनात्मक और सकारात्मक राष्ट्रवाद ही है। यह गीत भारत को फिर से एक मजबूत, सुरक्षित, समृद्ध और न्यायसंगत राष्ट्र बनाने के विचार और मिशन से भरे हुए हैं। साथ ही यह गीत परंपरागत भारतीय साहित्य, समाज, संस्कृति और शिक्षक दर्शन का उपयोग करके राष्ट्रभक्ति का गीतात्मक प्रकटीकरण भी करते हैं। ■

(लेखक, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर हैं।)

। परिवर्तन ।

गुलामी की निशानियों से मुक्त होने में जुटी भारतीय सेना

औपनिवेशिक विरासत से मुक्त होने के लिए भारतीय सेना ने 246 सड़कों, भवनों और सुविधाओं के नाम बदल दिए हैं। यह पहल सेना के संस्थागत परिसरों को भारत की सैन्य परंपराओं और राष्ट्रीय लोकाचार के अनुरूप बनाने के निरंतर प्रयासों का एक हिस्सा है।

भारतीय सेना के अनुसार संशोधित नामकरण से देश के वीरता पुरस्कार विजेताओं, युद्ध नायकों और विशिष्ट सैन्य नेताओं को विशेष स्थान प्राप्त होता है, जो साहस, बलिदान और नेतृत्व के मूल मूल्यों को दर्शाता है।

बदले गए प्रमुख नामों की सूची में दिल्ली छावनी स्थित मॉल रोड का नाम अरुण खेत्रपाल मार्ग (परमवीर चक्र विजेता) रखा गया है। इसी तरह किर्बी प्लेस को अब केनुगुरुसे विहार, टाइग्रिस रोड का नया नाम होशियार सिंह मार्ग, कैसल रोड का नया नाम मानेकशॉ मार्ग, कोतवाली रोड का नया नाम कैप्टन अनुज नैयर रोड एवं प्रॉबिन रोड का नया नाम शैतान सिंह मार्ग होगा। इसी प्रकार अंबाला छावनी में पेटरसन रोड क्वार्टर का नाम बदलकर धन सिंह थापा एन्क्लेव, न्यू हॉर्न लाइन अब अब्दुल हमीद लाइन्स, क्वींस लाइन रोड का नया नाम सुंदर सिंह मार्ग और न्यू बर्डवुड लाइन का नाम थिमैया कॉलोनी कर दिया गया है। सेना की महू छावनी में मैल्कम लाइन्स का नाम अब पीरू सिंह लाइन्स, कॉलिन्स ब्लॉक और किंग्सवे ब्लॉक का नाम क्रमशः नुब्रा ब्लॉक और कारगिल ब्लॉक रखा गया है। इसी तरह कोलकाता में फोर्ट विलियम का नाम बदलकर विजय दुर्ग किया गया है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

India's Advancements in the Field of Artificial Intelligence : A New Dawn

■ Dr. Punit K Dwivedi

India, a nation characterized by its rich tapestry of culture, diversity and a strong backbone of intellectual capital, is standing on the cusp of a remarkable transformation. At the heart of this evolution is the field of Artificial Intelligence (AI), which is poised to bring about unprecedented changes across various sectors such as education, research, business, trade, agriculture, start-ups and innovation. This essay delves into the strides India is making in AI and how the synergistic impact of this technology could reshape the future of the country and its people.

Self Employment Mind-set

The intersection of artificial intelligence (AI) and the start-ups sector presents a transformative opportunity for India to reclaim its historical legacy as a job creator. For centuries, India has been a hub of innovation and entrepreneurship, fostering trade and craftsmanship. Today, this ancient tradition can be revitalized through the strategic application of AI technologies.

AI holds the potential to revolutionize various sectors, including agriculture, healthcare and education, which are vital to India's economy. By enhancing productivity and efficiency, start-up specializing in AI can create scalable solutions that address local challenges while generating employment opportunities. For instance, AI-driven agricultural platforms can optimize crop yield, thereby increasing income for farmers and creating ancillary jobs in data analysis and machine maintenance.

Moreover, the proliferation of AI start-ups encourages a culture of innovation and technological proficiency among the Indian workforce. By nurturing talent in AI and fostering an ecosystem that supports entrepreneurship, India can engage its youth and leverage its demographic dividend effectively. Ultimately, the synergy of AI and start-ups not only

promises economic growth but also re-establishes India as a leading job creator, harking back to its ancient legacy of ingenuity and resilience. Through thoughtful integration of AI, India can forge a future that honours its past while addressing contemporary socio-economic challenges.

Artificial Intelligence and Research

India has recognized the potential of AI as a driver of change and innovation, leading to a significant surge in research initiatives. Government and private institutions alike are investing heavily in AI research, positioning the nation as a critical player in the global AI landscape. The establishment of research hubs, such as those at the Indian Institute of Technology (IITs) and Indian Institutes of Management (IIMs) is illustrative of this trend. Initiatives like the National AI strategy launched by NITI Aayog aim to promote R&D across various domains, including healthcare, agriculture and education.

In the healthcare sector, for instance, AI technologies are being used to optimize disease identification, with algorithms capable of diagnosing conditions with remarkable accuracy. According to a 2022 report from the Indian Medical Association, AI-assisted diagnostics reduce error rates by up to 30 percent, thus enhancing patient outcomes and elevating healthcare delivery standards. These advancements not only fortify the healthcare infrastructure but also foster a culture of continuous innovation.

Business, Entrepreneurship and Trade

The introduction of AI has heralded a new era for businesses in India, driving operational efficiencies and fostering innovation. From large corporations to burgeoning start-ups, organizations are leveraging AI to enhance productivity and derive meaningful insights from data. A report by NASSCOM indicates that the Indian AI market is expected to reach more USD 7.8 billion by mid of 2026, driven by increasing demands in areas such as customer service, supply chain management and financial services.

Moreover, India's vibrant start-up ecosystem is witnessing an influx of ventures that harness AI to create disruptive solutions. Entrepreneurs are now viewing AI as a launchpad for new business models. Start-ups like ZestMoney and NikiAI exemplify how AI enhances customer experiences while streamlining operations, showcasing a robust growth trajectory. The confluence of AI with entrepreneurship is not only amplifying economic growth but also fostering job creation.

The Changing Nature of Higher Education

The ripple effects of AI are prominently felt in the education sector, where traditional methods of teaching are being redefined. AI enables personalized learning experiences, allowing educators to tailor curricula and assessments to individual student needs. Initiatives such as the AI-enabled online platforms various Ed tech brands cater to diverse learning paces, ensuring that students receive the support they require.

Furthermore, educational institutions are increasingly adopting AI tools for administrative tasks, thereby allowing educators to focus on teaching rather than bureaucracy. According to a survey conducted by the think tank, Education 4.0, around 70 percent of institutions are now implementing AI technologies, highlighting a shift towards a more efficient education system that prepares the younger generation for future challenges.

Employment Creation

While concerns regarding job displacement due to AI advancements are valid, it is imperative to recognize the new job opportunities arising within this domain. Professions such as data analysts, AI engineers and machine learning specialists are in high demand and organizations are investing in extensive training programs that equip individuals with the requisite skills. The government has also launched initiatives like the Digital India Program, focusing on skill development in emerging technologies, ensuring that the workforce is well-prepared to thrive in a data-driven economy.

As per a report by McKinsey, India's workforce could see a net gain of 34 million jobs by 2030 due to AI adoption across various sectors, which should be viewed with optimism-suggesting a shift in job roles rather than a net loss.

Empowering Innovation : Insights from the India AI Impact Summit-2026

In the same context the India AI Impact Summit-2026, held in the vibrant heart of Delhi, showcased the nation's rapid strides in artificial intelligence, reflecting a blend of innovation, collaboration and future readiness.The summit brought together thought leaders, industry pioneers and tech enthusiasts, fostering a spirit of unity in pursuit of transformative solutions.

Key highlights included insightful panel discussions on AI ethics, where experts emphasized the importance of responsible AI development. Workshops focused on practical applications, demonstrating how AI can revolutionize sectors such as healthcare, agriculture and education, underlining its potential to enhance productivity and improve quality of life.

Networking sessions sparked exciting collaborations, with start-ups pitching ground breaking AI solutions to potential investors and partners. The showcase of emerging technologies, such as AI-driven robotics and data analytics tools, illustrated India's growing role as a global AI hub.

The event underscored the government's commitment to supporting AI research and development, promoting policies that encourage innovation. As participants left the summit, the prevailing sentiment was one of optimism. The India AI Impact Summit-2026 not only highlighted the nation's achievements, but also inspired a collective vision for a future where AI empowers every citizen, driving socio-economic growth and global leadership. ■

Creativity and Skills

AI's integration into creative fields is also noteworthy, transforming art, music and content creation. The collaboration between human creativity and AI algorithms has given rise to new forms of artistic expression and innovation. For example, AI-generated music has gained traction, with platforms like Jukedeck allowing users to produce original compositions effortlessly. Furthermore, training programs designed to upskill workers in digital literacy and AI-related domains foster self-development, thereby nurturing creativity alongside technological competency.

Future Impact of AI

The potential societal impact of AI adoption in India cannot be overstated. It promises improvements in citizen services through efficient governance, transparency and accessibility. By digitizing processes, utilizing predictive analytics to anticipate citizen needs and providing timely services, AI technologies can significantly enhance the quality of life. This advancement can lead to a more inclusive society where socio-economic gaps are minimized, reflecting a broader social revolution.

In conclusion, India's advancements in the field of Artificial Intelligence mark the beginning of a transformative phase poised to bring far-reaching benefits across several domains. The confluence of innovation and technology in education, research, business and society underscores the possibilities that lie ahead.

As India embraces AI as a cornerstone of its development strategy, it is silently charting a course towards a future characterized by opportunity, creativity and inclusiveness. This optimistic trajectory indicates a promising new dawn for the nation as it strives to become a global leader in the world of technology and innovation. ■

(The author is Professor and Group Director at Oxford-Indore International College, Indore)

संघ दर्शन में सामूहिकता

■ डा. रजत शर्मा

विश्व के सबसे बड़े सामाजिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की सदस्यता शुल्क जमा करके प्राप्त नहीं होती है। अपितु जो व्यक्ति शाखा में जाता है, वह संघ का सदस्य अर्थात स्वयंसेवक है। दैनिक जीवन में घर के आसपास लगने वाली शाखा ही संघ की वह धुरी है, जिसमें समाज के प्रबुद्ध जन के साथ-साथ समाज का प्रत्येक वर्ग सम्मिलित होता है। संघ की शाखा को देश के प्रत्येक जिले, नगर एवं कस्बे में देखा जा सकता है।

अपने स्थापना काल से 'संघ' हिंदू जीवन दर्शन को केंद्र में रखकर चलता आया है। हिंदू जीवन दर्शन की एक विशेषता 'सह-अस्तित्व' है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' के भाव-दर्शन के मूल में भी 'सह अस्तित्व' की दृष्टि ही गतिमान है। यह दृष्टि व्यक्ति से ऊपर सामूहिकता को स्थान देती है। संघ अपने स्थापना काल से ही 'सह-अस्तित्व' के दर्शन को 'सामूहिकता' के द्वारा भाव-व्यवहार में पिरोता आया है। व्यक्ति से सामूहिकता की यात्रा संघ के कार्यक्रमों विशिष्टता रही है। वह चाहे बौद्धिक कार्यक्रमों में गीत, सुभाषित, एकात्मता स्तोत्र, प्रार्थना आदि का सामूहिक गायन हो या शारीरिक कार्यक्रमों में समता-संचलन, खेल, योग या अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से जनमानस को साथ-साथ काम करने का अभ्यास कराना। 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के नामकरण, शाखा के स्वरूप, शारीरिक-बौद्धिक कार्यक्रम, प्रशिक्षण वर्ग आदि का निर्णय भी स्वयंसेवकों ने मिलकर लिया, जिसका बीज बिंदु डा. केशव बलिराम हेडगेवार का जीवन-अनुभव रहा।

संघ की निर्णय प्रक्रिया भी व्यक्ति केंद्रित न होकर, सामूहिक निर्णय प्रक्रिया है। 'बैठक' संघ जीवन का एक अभिन्न अंग है। अखिल भारतीय स्तर से शाखा स्तर तक बैठकों का निरंतर क्रम संघ कार्य की गति को सुचारू बनाए रखता है। संघ के नीति निर्धारण से लेकर उसके कार्यान्वयन तक का निर्णय इन्हीं बैठकों में होता है। बैठकों के माध्यम से निर्णय के पीछे भी विशेष उद्देश्य निहित है। बैठकों में सबके साथ निर्णय लेने से कार्यकर्ता में 'कार्य के प्रति अपनत्व', 'सामूहिक सहभागिता', 'एक लक्ष्य की ओर सबके साथ बढ़ने की प्रेरणा' तथा 'कार्य को अपनी पूर्णता तक पहुंचाने की सामूहिक दृढ़ता' पैदा होती है। यह संघ की निर्णय प्रक्रिया को विशिष्टता प्रदान करती है।

संघ में 'अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा' की बैठक कार्य निर्धारण की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण है। इसमें शाखाओं के अनुसार प्रांतों से निर्वाचित सदस्य, क्षेत्रों एवं प्रांतों के दायित्ववान कार्यकर्ता (संघचालक, कार्यवाह और प्रचारक), अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल के सदस्य तथा सरकार्यवाह के निमंत्रण पर विशिष्ट श्रेणी के कार्यकर्ता सम्मिलित होते हैं। संघ-कार्य की समालोचन और नीति निर्धारण भी इसी बैठक में होता है। 'प्रतिनिधि सभा' द्वारा निर्धारित नीति और कार्यक्रमों को 'अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल' देशभर की समस्त शाखाओं तक कार्यान्वित करने के लिए समन्वय करता है।

संघ में कार्यकारी मंडल की संरचना प्रांत, विभाग तथा जिला स्तर पर समान रूप से की गई है, जो संघ के महत्वपूर्ण निर्णयों के पीछे 'सामूहिकता' को इंगित करता है। कार्यकारी मंडल के अतिरिक्त, शाखा की टोली बैठकें भी उसी मूल 'सामूहिक' तत्व का सबसे साकार रूप है, जिससे प्रत्येक स्वयंसेवक परिचित होता है। सामान्य-से-सामान्य और संघ में निर्णय प्रक्रिया को लेकर प्रचारित भ्रांतियां संघ की 'शाखा' में जाकर ही दूर हो सकती हैं। 'शाखा' संघ के व्यापक संरचनागत-स्वरूप का इकाई परिचय है। ■

(लेखक लक्ष्मीबाई कालेज, दिल्ली में सहायक प्राध्यापक हैं।)

बांग्लादेश में बदलाव और भारत की चुनौतियां

■ डा. प्रशांत त्रिवेदी

बांग्लादेश में संपन्न आम चुनाव में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) द्वारा दो-तिहाई से अधिक बहुमत प्राप्त करके तारिक रहमान के नेतृत्व में सरकार का गठन हो चुका है। गत अठारह माह से देश की राजनीति में आए उथल-पुथल के बाद यह एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम है। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के नेतृत्व वाली सरकार को जबरन सत्ता से हटाने के बाद बांग्लादेश अस्थिरता की स्थिति में चला गया था। उसके बाद से भारत के लिए वहां के हालात एक नई रणनीतिक चुनौती के रूप में उभरे। भारत-बांग्लादेश के जटिल होते संबंधों के बीच नए प्रधानमंत्री तारिक रहमान ने भारत के साथ संबंध सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया है।

शेख हसीना को हटाने के बाद गठित हुई निवर्तमान अंतरिम सरकार के कार्यकाल के दौरान बांग्लादेश में भारत विरोधी गतिविधियों में अप्रत्याशित बढ़ोत्तरी दर्ज हुई, जिसका सर्वाधिक दुष्परिणाम अल्पसंख्यक हिन्दुओं को हत्या, लूटपाट, आगजनी के रूप में भुगतना पड़ा। नई सरकार के गठन के बाद भी अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर अत्याचार से जुडी घटनाएं सामने आ रही हैं, जो गंभीर चिंता का विषय हैं।

बांग्लादेश की गंभीर अंदरूनी स्थितियों के बीच चिंता का विषय यह है कि इस्लामिक कट्टरपंथी पार्टी जमात-ए-इस्लामी को अधिकतर सीटें भारतीय सीमा से सटे उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों-जैसे खुलना, राजशाही, रंगपुर में मिली हैं। भारत विरोध की राजनीति करने वाले जमात-ए-इस्लामी ने बांग्लादेश में सदैव भारत-विरोधी भावनाओं को बढ़ावा दिया है। ऐसे में सीमा से सटे उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में घुसपैठ, चरमपंथी गतिविधियां एवं पूर्वोत्तर भारत में सक्रिय उग्रवादी समूहों को समर्थन मिलने की आशंका बढ़ गई है।

भारत की चिंता यह भी है कि जमात-ए-इस्लामी का बढ़ता प्रभाव भारत के सीमावर्ती राज्यों पश्चिम बंगाल और असम में इस्लामिक कट्टरपंथ को बढ़ावा देगा, जिससे भविष्य में गंभीर आंतरिक समस्याएं उत्पन्न हो

सकती हैं। बांग्लादेश में हिंदू-विरोध केवल अल्पसंख्यक समस्या के रूप में नहीं देखा जा सकता है, बल्कि यह भारत की सुरक्षा, संस्कृति और दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय स्थिरता का प्रश्न भी है।

बांग्लादेश में गत तीन दशकों में ऐसा पहली बार हुआ, जब चुनाव में दो प्रमुख महिला नेता शेख हसीना (अवामी लीग) और खालिदा जिया (बीएनपी) अनुपस्थिति रहीं। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना वर्तमान में भारत में स्व-निर्वासन में रह रही हैं। अंतरिम सरकार ने शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग के चुनाव लड़ने पर प्रतिबंध लगाए जाने के कारण आवामी लीग ने चुनाव नहीं लड़ा, जबकि खालिदा जिया का गत वर्ष 30 दिसंबर को निधन हो गया था। उनके निधन के बाद उनके पुत्र तारिक रहमान ने बीएनपी की कमान संभाली और अब वह देश के नए प्रधानमंत्री बन गए हैं।

आम चुनाव में बीएनपी को बहुमत मिल गया, लेकिन जमात-ए-इस्लामी भी पीछे नहीं है। जमात गठबंधन ने 77 सीटों पर जीत हासिल की है, जिसमें जमात-ए-इस्लामी की 68 सीटें शामिल हैं। चुनाव में अवामी लीग की अनुपस्थिति के कारण यह प्रश्न बना हुआ है कि क्या परिणाम पूरी जन-इच्छा को दर्शाते हैं ? गोपालगंज जैसे क्षेत्रों में, जो अवामी लीग का गढ़ माने जाते हैं, बड़ी संख्या में मतदाताओं ने मतदान नहीं किया और

बांग्लादेश चुनाव परिणाम

कुल सीट : 299
बीएनपी गठबंधन : 212
बीएनपी : 209
जमात-ए-इस्लामी गठबंधन : 77
जमात-ए-इस्लामी : 68 सीट
इस्लामी आंदोलन बांग्लादेश : 1
अन्य : 7
शेष : 2 (न्यायालय में लंबित)

मतदाताओं से रहित चुनाव बताया।

फिलहाल अंतरिम सरकार ने चुनी हुई सरकार को सत्ता हस्तांतरित कर दी है। नए प्रधानमंत्री तारिक रहमान ने प्रधानमंत्री पद को संभाल लिया है और अब वह देश की बाह्य एवं अंदरूनी स्थितियों को सामान्य बनाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं क्योंकि बांग्लादेश एक अहम मोड़ पर खड़ा है। एक तरफ भारत विरोधी इस्लामिक कट्टरपंथियों की गतिविधियों पर लगाम लगाने की चुनौती तो सामने है ही, साथ ही आर्थिक एवं सामाजिक रूप से बदहाल हो चुके देश की आमूलचूल स्थितियों में बदलाव का प्रश्न भी उनके सामने खड़ा है। ■

(लेखक शहीद भगत सिंह कालेज, दिल्ली में सहायक प्राध्यापक है।)

। राजस्थान ।

वीरबाला काली बाई प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) कोटा महानगर द्वारा वीरबाला काली बाई प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में अभाविप द्वारा युवा दिवस पर नगर के विभिन्न संस्थानों में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। समारोह में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रा. निमित चौधरी मुख्य अतिथि एवं अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री हर्षित ननोमा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

समारोह में मुख्य अतिथि निमित चौधरी ने अभाविप की सराहना करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना चाहिए। अभाविप ज्ञान-शील-एकता के मंत्र के साथ विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन के रूप में परिसरों में ऐसी गतिविधियां चला रही है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक है। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि जो विजेता नहीं बन पाए हैं, उनके लिए आगे और बेहतर तैयारी करने का नया अवसर आता रहेगा।

समारोह के मुख्य वक्ता एवं अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री हर्षित ननोमा ने वीरबाला काली बाई भील की वीरता से जुड़े कई प्रसंगों को सामने रखा। उन्होंने बताया कि अभाविप वीरबाला काली बाई की जीवनी, उनके त्याग-बलिदान एवं गुरु-शिष्य की अटूट परंपरा को सामने लाने का कार्य कर रही है। गत दो वर्षों में काली बाई भील प्रतिभा सम्मान समारोह के माध्यम से अभाविप ने राज्य में हजारों विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का कार्य किया है। अभाविप युवाओं के बढ़ते हुए स्क्रीन टाईम को कम करने के लिए स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम, नो मोबाइल ऑवर, आनन्दमय सार्थक छात्र जीवन जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों के कल्याण के लिए कार्यरत है। कार्यक्रम में अभाविप की प्रांत सह-मंत्री चेतना पांचाल, विभाग संयोजक पुलकित गहलोत सहित कई अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

The Apostle of Self-Realisation and Social Awakening

■ **Yuganshu Vats**

India has always been a land of seekers of truth and ultimate reality who with their knowledge showed right path to the humanity. Over different periods in history, certain evils and unrest develop in society, the 6th century BCE was an age of such churning. Ritual authority dominated religion, caste divisions shaped social identity and violence often accompanied power and prestige. There was inequality and discomfort in the society. In this circumstance of unrest a child was born in Kundagrama near Vaishali to King Siddhartha and Queen Trishala. Named Vardhamana, later known to the world as Lord Mahavira-a spiritual reformer whose life became a beacon of moral awakening. Considering him merely a Jain Saint would be a big mistake as Lord Mahavira is one of those whose life was not merely that of a monk or teacher, it was a turning point in the ethical and spiritual consciousness of Indian society.

Vardhaman grew up in a royal family, he had every luxuries possible and was always surrounded by affection and prosperity. The Jain accounts describe him unusually mature for his age. As he was a prince, he was trained in princely education which included martial skills and scholarly learning, which his family thought would help him to become a great king one day but the destiny drew him away from all luxuries and a princely lifestyle. Despite marriage and family responsibilities, a deeper spiritual calling stirred within him. Observing the suffering, inequality and ritual excess of his time, he gradually resolved to pursue the path of renunciation.

Time passed and at the age of thirty, he chose the path of renunciation. His inward journey started, he put his first step in the spiritual world publically removing his ornaments and royal garments, plucked out his hair and embraced the life of an ascetic. This transition marked the beginning of an intense inward journey. His resolve was very clear-to abandon harmful conduct in thought, speech and action and to cultivate perfect equanimity under all circumstances.

Mahavira's ascetic period lasted twelve years five months and fifteen days. During this time, he practiced deep meditation, silence and austerity sitting under a Sal tree in a garden on the bank of river Rijubaluk. He endured hunger, harsh weather, insults and physical hardship without anger or resentment. What distinguished him was not the severity of suffering alone, but

the calmness with which he accepted it. He neither reacted with hostility nor retreated in despair. Through unwavering self-control, he gradually dissolved the karmic bonds that obscure the soul. He attained complete knowledge and his soul becomes fully awakened and free from ignorance. From then onward, Mahavira was not merely a seeker but a guide for others.

According to Jain tradition, the path Mahavira taught was eternal. He did not claim to invent a new faith or new path. Instead, he rediscovered and rearticulated timeless truths that had faded from common understanding of the people of India. In this sense, he is remembered as a Tirthankara-one who shows the ford across the river of worldly suffering. Jain philosophy places the soul at the centre of spiritual reality. Mahavira emphasized that the soul itself is responsible for both bondage and liberation. A soul to which karmas are attached wanders through birth and death. The same soul if freed from karmic impurities, rises to the state of perfection. This understanding shaped both his spiritual teaching and his social outlook.

His age was a period of social unrest and inequality in the society on the basis of caste and class. Not only this but animal sacrifice were also very common for certain religious purpose. Lower section of society faced discrimination on the ground of their birth in specific caste. Against this backdrop Mahavira's teachings carried profound revolutionary force. He made it clear that regardless of birth or status every soul is independent and is capable of attaining liberation. He declared that spiritual worth does not depend on caste or any social position. This idea of Mahavira struck the roots of discrimination by placing the soul above all the social, political and religious hierarchy. His equally significant contribution was uncompromising stand against violence. Non-violence as well known to the world is one of the core principles of Indian philosophy, Mahavira expanded the idea by including every living beings. Non-violence does not only means restrain from physical violence but also applies to thoughts, words, and actions. He tried to bring a drastic social change with the help of his spiritual understanding. Emphasis on non-possessiveness is an indication of it.

Following the path of many other enlightened beings, Mahavira also did not isolate himself from the society after attaining enlightenment. He travelled across the region for nearly three decades and guided both-common masses and his followers. His approach to conflict emphasised dialogue, patience and moral clarity rather than force. In this way one can see his spiritual philosophy carried political significance.

After Mahavira left his body and attained nirvana, the community he nurtured preserved and transmitted his knowledge and teachings across various regions and for various generations. His teachings not only helped the revival of Jain community but also his emphasis on self-effort, compassion and equality became enduring elements of India's philosophical landscape. His teaching and life lessons still remains relevant. At present in the times of intolerance and regional tensions, accumulation of excessive resources and resulted wars, environmental tensions, his insistence on non-violence and restraint speaks with renewed urgency. He demonstrated that the greatest conquest is mastery over one's own passions. His life is itself a lesson which teaches and reminds that the social renewal begins from self and inner discipline. ■

(Author is Social activist and Scholar)

शैक्षिक संस्थानों में व्याप्त अनियमितताओं को लेकर उच्च शिक्षा मंत्री का घेराव

समस्याओं के समाधान के लिए अभाविप ने दिया ज्ञापन

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय में लंबे समय से व्याप्त शैक्षणिक एवं प्रशासनिक अनियमितताओं एवं बार-बार ज्ञापन देने के बाद भी कुलगुरु द्वारा समस्याओं का निराकरण न किए जाने के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) जबलपुर महानगर द्वारा उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार का घेराव करके उन्हें एक ज्ञापन सौंपा। आक्रोशित विद्यार्थियों ने उच्च शिक्षा मंत्री का घेराव उस समय किया, जब वह गत 21 फरवरी को होम साइंस कॉलेज के वार्षिक उत्सव कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए पहुंचे थे। उनकी उपस्थिति में अभाविप कार्यकर्ताओं ने कालेज के बाहर धरना-प्रदर्शन करते हुए विश्वविद्यालय से जुडी अव्यवस्थाओं की ओर ध्यान आकृष्ट कराया।

अभाविप कार्यकर्ताओं के धरना-प्रदर्शन को देखते हुए उच्च शिक्षा मंत्री परमार सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने प्रदर्शनकारी छात्रों से मुलाकात की। मुलाकात के दौरान छात्रों ने विस्तार से अपनी समस्याएं उनके सामने रखते हुए शीघ्र समाधान की मांग की। अभाविप ने विश्वविद्यालय में बिना संसाधनों एवं शिक्षकों के चल रहे पाठ्यक्रम, युवा उत्सव का बकाया शुल्क, डिग्री प्रिंटिंग, जर्जर भवन, परीक्षा परिणामों में हो रही देरी, मूल्यांकन प्रक्रिया की पारदर्शिता सहित बुनियादी सुविधाओं की कमी जैसे गंभीर मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। अभाविप कार्यकर्ताओं ने बताया कि इन समस्याओं को लेकर पूर्व में कई बार कुलगुरु को ज्ञापन सौंपा गया, किंतु उनके द्वारा कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। इससे छात्रों का शैक्षणिक भविष्य प्रभावित हो रहा है।

अभाविप के केंद्रीय कार्यसमिति सदस्य माखन शर्मा ने कहा कि यदि शीघ्र ठोस कदम नहीं उठाए गए तो आंदोलन को और व्यापक रूप दिया जाएगा। अभाविप ने मांग की है कि विश्वविद्यालय प्रशासन की कार्यप्रणाली की उच्चस्तरीय जांच कर जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई सुनिश्चित की जाए, ताकि छात्रों के हितों की रक्षा हो सके। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

सुधी पाठकों!

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' मार्च-2026 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों एवं खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव एवं विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई-मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

प्रा. केलकर के जन्म शताब्दी वर्ष पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के संगठन शिल्पी, विचारक एवं राष्ट्रनिष्ठ कार्यकर्ता स्वर्गीय प्रा. यशवंत राव केलकर के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अभाविप शिमला महानगर द्वारा अभिवाचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों में राष्ट्रवादी विचारधारा, संगठनात्मक चेतना तथा बौद्धिक विमर्श को सशक्त करने के उद्देश्य से आयोजित कार्ग्रकम में शिमला महानगर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों से जुड़े विद्यार्थी, कार्यकर्ता एवं बौद्धिक वर्ग की सक्रिय सहभागिता रही।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में हिस्सा लेने वाले अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री देवदत्त जोशी ने अपने संबोधन में प्रा. केलकर के जीवन, उनके संगठनात्मक प्रयोगों तथा अभाविप को एक सशक्त राष्ट्रवादी छात्र संगठन के रूप में खड़ा करने में किए गए उनके योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विचारों की स्पष्टता, अनुशासन और निरंतर परिश्रम के माध्यम से छात्र शक्ति को राष्ट्र निर्माण का माध्यम बनाया जा सकता है, यह उन्होंने सिखाया। आज के विद्यार्थियों को उनके विचारों से प्रेरणा लेकर समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अभाविप के पूर्व कार्यकर्ता सुफल सूद ने अपने विद्यार्थी जीवन के अनुभव साझा करते हुए कहा कि उनका चिंतन केवल संगठन तक सीमित नहीं था, बल्कि वह संपूर्ण समाज के मार्गदर्शक हैं। अभाविप कार्यकर्ताओं को उनके विचारों को आत्मसात कर उन्हें व्यवहार में उतारने की आवश्यकता है, ताकि संगठन की वैचारिक मजबूती के साथ-साथ समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सके।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों द्वारा प्रा. केलकर के जीवन, विचार एवं संगठनात्मक दर्शन पर आधारित विभिन्न पाठों का वाचन किया गया, जिससे उपस्थित लोगों को उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को गहराई से समझने का अवसर मिला। कार्यक्रम के अंत में अभाविप शिमला महानगर ने यह संकल्प व्यक्त किया कि उनके जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर पूरे वर्ष विभिन्न बौद्धिक, शैक्षणिक एवं सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से उनके विचारों को विद्यार्थियों और समाज तक पहुंचाया जाएगा। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

ABVP Condemns Detention of Activists After Protest at Azim Premji University

A major controversy has erupted at Azim Premji University in Sarjapur after the Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) accused student groups SPARK and All India Students' Association (AISA) of attempting to organise 'anti-national' programmes on campus. The ABVP alleged that the proposed events promote Kashmir separatism and insult members of the Indian armed forces.

According to ABVP, SPARK and AISA have scheduled events on February 26, 27 and 28 within the university premises. The student organisation claimed that these programmes are designed to propagate narratives questioning Kashmir's status as an integral part of India and to portray Indian soldiers in a derogatory light. ABVP members staged a protest outside the university campus, demanding immediate cancellation of the events and action against the organisers.

The protest intensified on 24th february night, prompting police to step in. A total of 21 ABVP activists were detained from the protest site. An FIR was registered against them. The Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) has strongly condemned the detention of its karyakarthas by the Karnataka Police following a protest at Azim Premji University (APU) against a campus event organised by a group identified as 'SPARK'.

According to ABVP, the protest was held in response to a session titled 'Remember KunanPoshpora' conducted on February 24, 2026. The student organisation alleged that remarks made during the session portrayed the Indian Armed Forces in a derogatory manner, which they described as deeply disrespectful and hurtful to soldiers and their families.

ABVP activists gathered on campus raising slogans and demanding action against the organisers of the event. They also called upon the university administration to take responsibility and ensure that such programs are not permitted in the future. Police personnel later intervened at the site and detained several ABVP karyakartas.

In a statement, ABVP claimed that this was not the first instance of such events being organized on the campus. The organization alleged that over the past few years, the group 'SPARK' has conducted multiple programs that, according to ABVP, included discussions relating to pro-Kashmir separatism, lectures alleged to be sympathetic to Naxal ideology and events expressing solidarity with individuals accused in extremist activities.

Expressing concern over what it termed as repeated 'anti-national activities' within an academic space, ABVP urged the Karnataka Police to :

-Take action against those involved in the alleged insult of the Indian Armed Forces.

-Conduct a transparent inquiry into the content and nature of the event.

-Clarify whether proper permissions and institutional approvals were obtained.

-Ensure that university platforms are not used to promote extremism or sentiments perceived as disrespectful to national institutions.

-Gopi Rangaswamy, State Secretary (Karnataka South) of ABVP, stated that the protest was intended to uphold the honour of the Indian Armed Forces and oppose what the organization described as repeated objectionable activities on campus. He expressed concern over the detention of ABVP activists, stating that instead of acting against those allegedly responsible for controversial remarks, the police detained students who were raising their voice in protest.

ABVP has called upon the state government to release the detained karyakartas and to initiate appropriate action after an inquiry into the matter. The organization also appealed to students and civil society to uphold constitutional values and ensure that academic institutions remain spaces for balanced and respectful dialogue. As of the filing of this report, there has been no official statement from the university administration or the police department regarding the incident. ■

(Rashtiya Chhatrashakti Team)

ABVP Breaks Left Fortress and Scripts History

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) scripted history by winning the Joint Secretary post and Executive Councilor positions in the Student Union Elections at the Central University of Kerala (CUK). K. J. Aparna, a first-year MSc Yoga Therapy student, secured the Joint Secretary post on the ABVP panel by a significant margin, while Vikas Kumar Nayak, a third-year student in the Integrated Teacher Education Program, was elected as an Executive Councilor.

ABVP's triumph in the CUK elections is noteworthy, as the university has historically been regarded as a stronghold of SFI. This victory is seen as a pivotal moment, signaling a potential transition away from the long-standing dominance of Left-wing student politics on campus predominantly based upon hooliganism and Anti national activities to the welfare centric functioning of ABVP.

The recent successes of ABVP in Student Union Elections across the nation including Delhi University, Hyderabad Central University and Panjab University alongside this win at the Central University of Kerala, indicate a growing acceptance of ABVP in and its 'Nation First' ideology among the youth.

ABVP maintains that it will consistently engage in the affairs of the student community at the university and will wholeheartedly attempt to resolve the challenges afflicting everyone on campus. Furthermore, it will navigate Central University of Kerala to greater heights by establishing an academic environment that fosters dialogue and deliberation, enhancing the knowledge and skills of students to ultimately help them attain holistic growth. Meanwhile, ABVP will make students aware of the vitality of their contributions toward achieving the objective of Viksit Bharat.

ABVP National Secretary Shravan B Raj stated 'The victory of ABVP candidates K. J. Aparna and Vikas Kumar Nayak for the posts of Joint Secretary and Executive Councilor in the Student Union elections at the Central University of Kerala is resounding and historical. The anti-students policies of the SFI-led union caused serious hardships for students in past years and their incompetency adversely affected the progress of the university. Therefore, the students reposed faith in ABVP and considered it a formidable force for resolving their issues, which helped us emerge victorious in the polls.

Newly elected Joint Secretary of Central University of Kerala K. J. Aparna said The student community of the Central University of Kerala has embraced the 'Nation First' ideology of the ABVP and reposed its utmost faith in us by delivering such a historic mandate. Our decisive success in the varsity polls demonstrates the student's aspiration for a proactive student organization that holds a vision for progress and places student welfare at paramount. Furthermore, this mandate is a befitting reply to the SFI, who are ruling the campus with intolerant politics and regressive thoughts; it is certain that in the near future, they will lose their remaining posts and their 'Urban Naxal' ideology will be eradicated from the university. ABVP will consistently work toward ensuring the betterment of students and will treat the Student Union as a sanctum for resolving their issues. ■

(Rashtiya Chhatrashakti Team)

वामपंथियों का असली चेहरा फिर आया सामने, वामपंथ-विरोधी विद्यार्थियों की हत्या का किया गया प्रयास: अभाविप

दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में गत 22 फरवरी की रात को हिंसक झड़प हुई, जिसमें कई छात्र गंभीर रूप से घायल हो गए। इनमें से कुछ छात्रों की स्थिति गंभीर बताई जा रही है। घायल छात्रों के कई वीडियो सामने आए हैं। घायल छात्रों का कहना है कि परिसर के स्कूल क्षेत्रों में शांतिपूर्वक पढ़ाई कर रहे आम छात्रों को वामपंथी समूहों ने घेर कर हमला किया। अभाविप के अनुसार गत 22 फरवरी को चार सौ से अधिक वामपंथी नकाबपोश हमलावरों की भीड़ ने सुनियोजित ढंग से आम छात्रों को निशाना बनाया। यह हमला पूर्व-नियोजित था, जिसमें अभाविप कार्यकर्ताओं को चिह्नित कर प्राणघातक हमला किया गया।

जानकारी हो कि अभाविप छात्रविरोधी सीपीओ मैन्युअल जोकि लेफ्ट नीत जेएनयूएसयू तथा लेफ्ट नीत जेएनयूटीए के कार्यकाल के दौरान लागू हुआ, के विरुद्ध लगातार आंदोलन कर रही है। अभाविप के छात्र हितैषी आंदोलन से बौखलाए लेफ्ट नीत जेएनयूएसयू से जुड़े छात्रों ने हमला किया। जब अभाविप कार्यकर्ता आम छात्रों को बचाने गए तो वामपंथियों की नकाबपोश भीड़ ने उन्हें चिह्नित कर जान से मारने की नीयत से हमला किया। दो शोधार्थियों विजय और मनीष को 150 से भी अधिक हिंसक वामपंथी कार्यकर्ताओं ने दौड़ा-दौड़ा कर पीटा। भयभीत छात्रों ने पुलिस को सूचना दी, परंतु इतनी बड़ी उपद्रवियों की फौज को संभालने के लिए केवल 3-4 पुलिसकर्मी ही आए, जो छात्रों को बचाने के स्थान पर मूकदर्शक बने रहे। इसके पश्चात अभाविप के कार्यकर्ताओं के सहयोग से सभी छात्रों को उपद्रवियों से बचाया गया।

छात्रों के अनुसार वामपंथी हमलावर पूरी तैयारी के साथ आए थे। उनके हाथों में धारदार हथियार, लोहे की रॉड और भारी पत्थर थे। प्रारंभ में पत्थरबाजी की गई, जिससे परिसर में भगदड़ की स्थिति उत्पन्न हो गई। अभाविप के अनुसार यह घटनाक्रम वामपंथी राजनीति के उस दोहरे चरित्र को उजागर करता है, जिसमें सार्वजनिक रूप से लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात की जाती है, किंतु परिसर के भीतर हिंसा का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार की संगठित हिंसा ने विश्वविद्यालय प्रशासन की सुरक्षा व्यवस्था पर भी गंभीर प्रश्न खड़े किए हैं। यह भी अचंभित करने वाला है कि जेएनयू प्रशासन ने जेएनयूएसयू के पदाधिकारियों को निष्कासित किया, परंतु इस निष्कासन के बाद भी उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर में इतनी बड़ी हिंसा को अंजाम दिया। वास्तव में देखा जाए तो हिंसा के पीछे जेएनयू प्रशासन भी उतना ही जिम्मेदार है, जितना कि जेएनयू छात्रसंघ के निष्कासित पदाधिकारी।

अभाविप जेएनयू इकाई मंत्री प्रवीण पीयूष ने कहा कि अभाविप विश्वविद्यालय परिसर को राजनीतिक हिंसा का अड्डा नहीं बनने देगी। वामपंथी छात्रों ने जो हिंसा की, उनका उद्देश्य वामपंथ विरोधी छात्रों की हत्या कर जेएनयू को नक्सलबाड़ी बनाना था। जेएनयू छात्रसंघ के पूर्व सहसचिव वैभव मीणा ने कहा कि यह संपूर्ण घटना एक सुनियोजित साजिश का परिणाम है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

जबलपुर : विभिन्न मांगों को लेकर मध्यप्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार का घेराव करते अभाविप कार्यकर्ता

कोटा : अभाविप द्वारा आयोजित वीरबाला कालीबाई प्रतिभा सम्मान समारोह में प्रमाण पत्र के साथ प्रतिभागी एवं मंचासीन अतिथिगण

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 MARCH, 2026
DATE OF PUBLISHING: 8 MARCH, 2026

POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI
POSTING REGISTRATION NO. DL(C)-11/1409/2024-26

नागपुर में आयोजित राष्ट्रीय पर्यावरण युवा संसद की झलकियां